वाल्ट व्हिटमैन
और
उनका साहित्य

[अमरीका के महान कवि वाल्ट व्हिटमैन की जीवन-यात्रा और उनके साहित्य की एक हृदय-स्पर्शी झलक]

मनोहर प्रभाकर

देवनागर प्रकाशन, जयपुर ।

कृति : वाल्ट व्हिटमैन और उनका साहित्य
कृतिकार : मनोहर प्रभाकर
प्रकाशक : देवनागर प्रकाशन, जयपुर-३
मुद्रक : एलोरा प्रिण्टर्स, जयपुर-३
मूल्य : रु० दस मात्र
प्रकाशन वर्ष : १९७३

उनको

जो

समानता और भाई चारे की भूमि पर

भारत-अमरीकी मैत्री

के पक्षधर हैं

अपनी बात

हिन्दी के पाठक जो अंग्रेजी के माध्यम से विश्व के श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं का रसास्वादन करने मे असमर्थ है उन्हें इन विदेशी भाषाओं के कृतिकारो के काव्य का आस्वादन कराने का हिन्दी के लेखकों पर निश्चित रूप से बड़ा दायित्व है। प्रस्तुत पुस्तक मे मैने अमरीकी साहित्य जगत के एक अत्यन्त प्रख्यात कवि वाल्ट व्हिटमैन की कतिपय कविताओं का भावानुवाद देने का प्रयत्न किया है। यद्यपि व्हिटमैन की कविताऐं मुक्त छन्दों मे लिखी हुई है तथापि काव्य रसिकों के समक्ष मैंने अधिकांश को छन्द बद्ध रूप मे ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। व्हिटमैन के काव्य के अतिरिक्त उनके द्वारा समय समय पर लिखे गये महत्वपूर्ण पत्र तथा डायरी के वे अंश भी जो उनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर विशद प्रकाश डालते हैं, पुस्तक में समाविष्ट कर लिए गये हैं।

पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से रवीन्द्र तथा व्हिटमैन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला एक लेख भी 'निष्ठा' त्रैमासिक के रवीन्द्र विशेषांक से परिशिष्ट के रूप मे जोड़ दिया गया है। इसके लिए हम इस लेख के लेखक तथा 'निष्ठा' के सम्पादक-प्रकाशक के प्रति अपना आभार प्रकट करते है। जिन कविताओं का भावानुवाद यहां प्रस्तुत किया गया है उनका मूल पाठ भी पुस्तक के परिशिष्ट में दे दिया गया है।

आशा है व्हिटमैन के साहित्य-स्वरूप को समझने में इनसे पर्याप्त सहायता मिल सकेगी। इस पुस्तक मे यदि सहृदय पाठकों को तनिक रस उपलब्ध हुआ तो, मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगा।

—मनोहर प्रभाकर

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
१. परिचय की परिधि	१
२. पद्य-खंड	१३
३. गद्य-खंड	४६
४. परिशिष्ट–१	७५
५. परिशिष्ट–२	८३

परिचय की परिधि

परिचय का पराग

अमरीकी साहित्याकाश में वाल्ट व्हिटमैन का उदय एक युगान्तरकारी घटना थी। विश्व साहित्य में सम्भवतः ऐसे विवादास्पद साहित्यिक कम ही हुए हैं। एक ओर उनकी प्रचुर सराहना की गई तो दूसरी ओर उन पर भर्त्सनाओं की भारी बौछार की गई। सन् १८५६ में 'न्यूयार्क टाइम्स' में उनके बारे मे एक आलोचक ने इस प्रकार अपना मत व्यक्त किया था, 'हम लोगों के मध्य यह कौन जानवर पैदा हो गया है जो इस प्रकार की अनर्गल विचार धारा का प्रसारण कर रहा है। यह कौन उद्दंड युवक है जो अपने को युग कवि कहता है और जो इस प्रकार अनर्थक और ऊल-जलूल विचारो को जन्म देता है।' किन्तु दूसरी ओर उनके बारे में जार्ज बर्नार्ड शा जैसे व्यक्ति ने कहा "व्हिटमैन एक क्लासीकल कवि है। बड़े आश्चर्य का विषय है कि अमरीका जैसे देश मे उसका व्यक्तित्व उस प्रकार नहीं उभरा है, जिस प्रकार देव लोक में सूर्य।'

इस प्रकार इस विवादास्पद महान् साहित्यकार का जन्म ३१ मई, १८११ को हटिंगटन स्थित वेस्ट हिल्स नामक स्थान पर हुआ। कुछ समय के बाद व्हिटमैन के पिता वाल्टर और उनकी माता लुईजा व्हिटमैन इस नगर को छोड़कर ब्रुकलीन नामक एक छोटे से गांव में आ बसे। उनके पिता भवन निर्माण के विशेषज्ञ थे। उन्होंने अपने परिवार के लिए अनेक मकान बनाये किन्तु भारी ऋण भार से दबे रहने के कारण उनमे से किसी पर भी उनका अधिकार नहीं रहा और व्हिटमैन परिवार को एक घर से दूसरे घर बदलते रहने पड़े।

बाल्यावस्था मे व्हिटमैन का जीवन लगभग वैसा ही रहा जैसा कि ब्रुकलीन गाव के साधारण लड़कों का। बालक व्हिटमैन गलियों में खेलता, मछलियां पकड़ता और मिलिटरी की वार्षिक परेड में भाग लेता। बाल्यावस्था में एक मात्र असाधारण घटना यह घटी कि एक बार फ्रांस के एक देश भक्त लेफैरे, ब्रुकलीन ग्राम में एक सार्वजनिक पुस्तकालय का शिलान्यास करने आये। लेफैरे ने भीड़ में से प्रफुल्लचित्त बालक व्हिटमैन को अपनी बाहो मे उठा कर चूम लिया।

व्हिटमैन की शिक्षा दीक्षा बहुत साधारण हुई। ११ वर्ष की अल्प आयु में उसकी शिक्षा समाप्त हो गई थी। स्कूल छोड़ने के बाद व्हिटमैन ने क्लार्क्स नामक दो वकीलो की एक फर्म में नौकरी कर ली। व्हिटमैन ने क्लार्क्स बन्धुओं के प्रति

अपना आभार प्रकट करते हुए एक स्थान पर इस प्रकार लिखा है 'एडवर्ड क्लार्क ने मुझे हस्त लेखन और वाक्य रचना का ज्ञान कराने में बड़ी सहायता दी और मुझे एक चलते फिरते पुस्तकालय का सदस्य बना दिया, जिससे मुझको पर्याप्त ज्ञान लाभ हुआ"। १२ वर्ष की अवस्था मे व्हिटमैन एक प्रेस में नौकर हो गया और उसने टाइप जमाने का काम सीखा। इस प्रकार अपनी किशोरावस्था मे व्हिटमैन एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहा। उसका जीवन शांतिपूर्ण नहीं था। १. वर्ष की आयु मे न्यूयार्क में वह एक कम्पोजीटर हो गया। नौकरी के बाद जो कुछ समय मिलता उसे थियेटर में बिताया करता। किन्तु प्रेस की इस नौकरी से भी वह ऊब गया और १७ वर्ष की आयु में उसने यह अनुभव किया कि उसे अब एक अध्यापक हो जाना चाहिये। अगले ३ वर्षों तक वह अनेक ग्रामीण स्कूलों में अध्यापक का कार्य करता रहा पर अन्त मे इससे भी वह ऊब गया।

सन् १८३९ मे व्हिटमैन को मन स्थिति में पुनः एक बार परिवर्तन आया। उसने न केवल एक लेखक होने का ही स्वप्न देखा बल्कि उसकी तीव्र इच्छा एक सम्पादक होने की भी हो उठी। १९ वर्ष की आयु मे वह पुनः न्यूयार्क चला आया और वहां उसने एक प्रेस खरीदा। इसके बाद हंटिंगटन के एक छोटे से कस्बे में उसने 'लॉग आइलैण्डर' नामक पत्र की स्थापना की। यद्यपि व्हिटमैन का यह अपना पत्र था तथापि वह इसे भी अधिक दिनो तक नही चला सका। यह साप्ताहिक पत्र लगभग एक वर्ष सचालित करने के बाद बन्द कर दिया गया। वह फिर एक बार न्यूयार्क चला आया और कुछ वर्षों तक वह विभिन्न प्रकार के पत्रो मे विभिन्न पदो पर कार्य करता रहा। २७ वें वर्ष मे व्हिटमैन अपने पत्रकार जीवन की उच्चतम सीढ़ी पर जा पहुंचा और फरवरी, १८४६ मे वह 'ब्रुकलीन ईगल' नामक पत्र का सम्पादक बना दिया गया। इस पत्र का कार्य-भार सम्हालने के साथ ही व्हिटमैन का पत्रकार, लेखक के रूप में बदलता गया। 'अमेरिकन रिव्यू' में उसने निबंध, सम्पादकीय और लोक कथायें लिखकर लेखक के रूप में पहले ही नाम उजागर कर लिया था। सन् १८४८ तक व्हिटमैन 'ब्रुकलीन ईगल' में कार्य करता रहा। जनवरी १८४८ में व्हिटमैन ने पत्रकारिता को त्यागने का सकल्प कर लिया किन्तु संयोग से उसकी मुलाकात फिर एक पत्र मालिक से हो गई और वह न्यूओरलियेन्स के 'डेली क्रीसेंट' नामक पत्र के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने के लिये चला गया। इस पत्र मे उसने अपनी यात्राओ का बड़ा ही रोचक वर्णन प्रकाशित किया। किन्तु इस पत्र से व्हिटमैन का सम्बन्ध अधिक दिनों तक नहीं रहा और वह फिर ब्रुकलीन लौट आया। ब्रुकलीन मे वह 'ब्रुकलीन फ्रीमेन नामक पत्र का सम्पादक हो गया। यद्यपि इस पत्र की कोई प्रति उपलब्ध नही होती, तथापि जो कुछ जानकारी हमें इसके बारे में

उपलब्ध होती है, वह उसके द्वारा अपने पुराने पत्र 'ईगल' में प्रकाशित एक सम्वाद से ही होती है जो उसने ११ सितम्बर, १८४६ से अपने नाम से इस प्रकार से प्रकाशित कराया था—"आज के दिन के बाद में 'ब्रुकलीन डेली फ्रीमैन' से अपना सम्बन्ध विच्छेद करते हुए जो मेरे मित्र रहे है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और जो मेरे शत्रु रहे है उनके प्रति सदा की भांति घृणा व्यक्त करता हूं।" व्हिटमैन के शत्रुओं की संख्या अपार थी। उन्होंने उसे कभी चैन की सांस नहीं लेने दी और न उसे किसी एक स्थान पर जमकर कार्य ही करने दिया। 'ब्रुकलीन फ्रीमैन' से मुक्त होने के बाद वह कुछ वर्षों तक अपनी आजीविका के लिये विभिन्न प्रकार के छोटे मोटे धन्धे करता रहा। कभी-कभी वह बढ़ईगीरी का काम भी करता और अपने पिता को भवन-निर्माण के कार्य में सहायता करता। इसके अतिरिक्त वह थोड़ा बहुत मुक्त लेखन भी करता रहा। इस काल की उसकी कुछ कविताएं 'ब्रुकलीन एडवरटाइजर' और 'न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट' में प्रकाशित हुई।

३५ वर्ष की आयु मे वाल्टर व्हिटमैन, जूनियर वाल्ट व्हिटमैन हो गया। उसने अपना यह नाम परिवर्तन दो कारणों से किया। एक तो अपने पिता के नाम को अपने से पृथक करने के लिए और दूसरे जो कुछ अब तक उसने इस नाम से किया था उसको भुलाने के लिए। उसका प्रथम कविता संग्रह जो 'लीव्ज आफ ग्रास' के नाम से प्रकाशित हुआ, वाल्टर व्हिटमैन के नाम से ही सामने आया। किन्तु इसके बाद उसने 'सोंग आफ माईसैल्फ' के नाम से जो कविता लिखी उसके रचनाकार के रूप मे उसने अपना नाम वाल्ट व्हिटमैन दिया। यही नाम आगे चलकर उसकी समस्त साहित्यिक कृतियों से सबद्ध हो गया। 'लीव्ज आफ ग्रास' का प्रथम संस्करण उसने निजी तौर पर ब्रुकलीन स्थित एक छोटे से प्रकाशक रोम ब्रदर्स द्वारा प्रकाशित कराया। इस संस्करण की मुश्किल से १००० प्रतियां मुद्रित की गई, जिनको वेचना व्हिटमैन के लिए कठिन हो गया। यहां तक कि कुछ पुस्तक विक्रेताओं ने तो इस पुस्तक को अपने यहां रखने से भी इन्कार कर दिया क्योंकि इसमे कतिपय तथा कथित 'अधार्मिक तत्वों' का समावेश था। कुछ पुस्तक विक्रेताओं ने उसकी प्रतियो को अपने यहां रखना स्वीकार तो किया, किन्तु उसकी बिक्री का कोई प्रबन्ध नहीं किया।

इसी पुस्तक का दूसरा संस्करण सन् १८५६ में प्रकाशित हुआ। इस बार भी यह पुस्तक निजी तौर पर ही प्रकाशित की गई। किन्तु इस बार फाउलर और वेल्स नामक प्रकाशकों ने इसका एजेन्ट बनना स्वीकार कर लिया। दुर्भाग्य से पुस्तक की समीक्षा इतनी कटु हुई कि उन्होंने भी अन्ततोगत्वा अपनी सहायता का हाथ खींच

लिया और इस पुस्तक के बारे में कोई भी दायित्व अपने ऊपर लेने से इन्कार कर दिया।

इस प्रकार इस पुस्तक का दूसरा संस्करण बड़ी खेदजनक परिस्थिति में प्रकाशित हुआ, किन्तु तीसरा संस्करण अनुकूल परिस्थितियों में सन् १८६० में प्रकाशित हुआ। बोस्टन की एक फर्म ने इसका नया संस्करण प्रकाशित किया। दुर्भाग्य से एक ही वर्ष में यह फर्म दिवालिया हो गयी और उसकी मुद्रण प्लेट्स एक बदनाम मुद्रक द्वारा खरीद ली गई।

सन् १८६७ और १८६२ के बीच इस पुस्तक के ६ अन्य संस्करण और प्रकाशित हुए। ६वां संस्करण सन् १८६१ में सम्पादित होकर पूर्ण हुआ और १८६२ में प्रकाशित हुआ। ह्विटमैन के निरीक्षण में प्रकाशित यह अन्तिम संस्करण था क्योंकि इसके तैयार होने के कुछ दिनों बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। "लीव्ज आफ ग्रास" के इन विभिन्न संस्करणों ने ह्विटमैन की ख्याति को तो अवश्य विस्तृत किया किन्तु उसकी आय में कोई विशेष वृद्धि इससे नहीं हुई। १८५७ में उसे पुनः पत्रकारिता की शरण लेनी पड़ी और वह "ब्रुकलीन डेली टाइम्स" का सम्पादक हो गया। उसने अपने इस पत्र में वेश्यावृत्ति और अन्य सामाजिक कुरीतियों का डटकर विरोध किया।

सन् १८६१ में ह्विटमैन ब्रुकलीन छोड़कर वाशिंगटन चला आया जहाँ हॉस्पिटल कैम्प में उसका भाई जार्ज घायल अवस्था में भर्ती कराया गया था। जार्ज मिलिटरी सेवा में था। १२ वर्ष तक ह्विटमैन वाशिंगटन में रहा। अस्पतालों में रोगियों की दयनीय दशा का अनुभव थोड़ा बहुत तो उसे ब्रुकलीन और न्यूयार्क के अस्पतालों में हो गया था। अब उसने घायल और असमर्थ सैनिकों की सेवा में अपना जीवन लगा दिया। अपनी मां को जो पत्र उसने वाशिंगटन से लिखे हैं, उनसे यह भली प्रकार ज्ञात होता है कि रोगियों के लिए उसके हृदय में असीम श्रद्धा, करुणा और सहानुभूति की भावना थी।

वाशिंगटन में ह्विटमैन "इण्डियन ब्यूरो आफ दी डिपार्टमेन्ट आफ दी इन्टीरियर" में एक क्लर्क बना दिया गया। वेतन उन दिनों को देखते हुए काफी अच्छा था। प्रति वर्ष १२०० डालर के वेतन से वह अपना जीवन आराम से बिता सकता था। 'इण्डियन ब्यूरो' में ह्विटमैन को बड़ी अनुकूल परिस्थिति सुलभ हुई। काम बहुत कम था और उसके पास पढ़ने लिखने के लिए काफी समय बच रहता था। इस पद पर तीन महीने रहने के पश्चात् ही उसे तरक्की दे दी गई। लम्बे अरसे तक वह यहाँ कार्य करता रहा, किन्तु अचानक इस नौकरी से उसे हाथ धोना पड़ा किन्तु नौकरी समाप्त होने के साथ ही जैसे उसकी प्रचुर ख्याति और प्रचार का युग आ

गया था। 'इण्डियन ब्यूरो' के सेक्रेटरी जेम्स हरमेन को यह शिकायत की गई कि उसके कर्मचारी व्हिटमेन ने एक अभद्र पुस्तक की रचना की है और इस पुस्तक की एक प्रति वह अपनी डेस्क में रखता है। हरमेन ने जाँच पड़ताल की और व्हिटमेन की निजी दराज को खोलकर देखा, जिसमें उसे "लीव्ज आफ ग्रास" की एक प्रति मिली। हरमेन भय भीत हो गया और उसने व्हिटमेन को बरखास्त कर दिया। इसकी बड़ी शक्तिशाली प्रतिक्रिया यह हुई कि कवि व्हिटमेन के मित्रों में आक्रोश की ज्वाला भड़क उठी। उसके एक मित्र ओकौनरो ने उसके बारे में नौकरी से बरखास्त होने के ६ सप्ताह पश्चात् "गुडग्रे ट पोयट" नाम से एक पैम्फलेट प्रकाशित किया जिसमे व्हिटमैन की प्रशसा के पुल बाँधे गये थे। इस पैम्फलेट का परिणाम यह निकला कि व्हिटमेन के साथ लोगो की सहानुभूति होने लगी और उसे एटार्नी जनरल के कार्यालय में स्थानान्तरित कर दिया गया, जहाँ वह ७ वर्ष तक अर्थात् सन् १८७२ तक कार्य करता रहा। यहाँ से वह डिपार्टमेन्ट आफ जस्टिस की एक ब्रान्च मे एक तृतीय श्रेणी क्लर्क के रूप मे नियुक्त करके भेज दिया गया। इन वर्षों का व्हिटमेन ने बड़ा सदुपयोग किया। उसन अनेक महत्वपूर्ण कविताऐं लिखी जिनमे से "पैसेज टू इण्डया" और "व्हिसपर्स आफ हैविनली डैथ" प्रमुख कही जा सकती हैं।

वाशिंगटन में व्हिटमैन का जीवन एकाकी नही था। उसके कई घनिष्ठ और वफादार मित्र थे। वह उन सिपाहियो से भी मिलता रहता थ जिनकी सेवा सुश्रूषा उसने अस्पतालों मे की थी। अनेक नवयुवक भी उसस मिलने आते थे जिनके नाम याद करने के लिए वह अपने पास सूची पत्र रखता था। इन नवयुवकों मे से पीटर डोयले नामक एक १८ वर्षीय आयरिश अमेरिकन से उसने घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर लिया था, जो कि एक युद्ध-कैदी भी रह चुका था। व्हिटमैन की उससे पहली मुलाकात एक कार कन्डक्टर के रूप में हुई थी। इसके बाद दोनों में बड़ा लम्बा पत्र व्यहार चलता रहा। लगभग १२ वर्ष तक उनमे यह पत्राचार चलता रहा। डोयले ने कवि व्हिटमैन के बारे में अपने विचार बड़े अधिकार पूर्ण शब्दों मे व्यक्त किये हैं। उसने लिखा है, "एक दूसरे के प्रति हम किस प्रकार आकर्षित हुए इसकी बड़ी मनोरंजक कहानी है। मैं उन दिनों एक कार कन्डक्टर था। वह रात भी बड़ी तूफानी थी। वाल्ट अपना कंबल ओढ़े था। उसे कहीं जाने के लिए कार की तलाश थी। वह कबल ओढ़े हुए एक समुद्री कप्तान की भाँति लगता था। उस सुनसान रात में वह एक मात्र मुसाफिर था, इसलिए मैंने उसे ले जाना स्वीकार कर लिया। कुछ ऐसा उसमे था जिसने मुझे आकर्षित किया और कुछ ऐसा मुझ मे था जिसने उसे आकर्षित किया। उसके बाद धीरे-धीरे हमारी मित्रता बढ़ती गई। वह कभी-कभी मेरी कार मे दोपहर मे सवार होता किन्तु रात को लगभग हमेशा सवार होता था। जब मैं

खाली चक्कर लगाता तो वह आवश्यक रूप से मेरा साथ देता था। अपना काम समाप्त करने के बाद हम दोनों वाशिंगटन के एक होटल में साथ-साथ जाते। मुझे आज भी वह जगह ठीक तरह से याद है जहाँ मैं कोने में चक्कर सो जाया करता था और वाल्ट मुझे बिना दखल किये होटल के जीवन को निर्निमेष देखता रहता था। वह तब तक वहां रुका रहता था, जब तक कि होटल के बन्द होने का समय नहीं हो जाता और इसके बाद मुझे जगाकर चल देता था।"

जीवन के अन्तिम चरण में ह्विटमैन अपने आपको बेघरबार और एकाकी महसूस करने लगा। उसे अपने परिवार की याद सताने लगी। मृत्यु का वह भय जो उसके मस्तिष्क पर पिछले कई वर्षों से मंडरा रहा था, उसकी कविता में मुखर होने लगा। उसने अपनी वसीयत भी तैयार करली, यद्यपि इसके बाद वह २० वर्ष तक जिन्दा रहा और अपनी कविताओं को संवारता सजाता रहा। ५४ वर्ष की आयु में ह्विटमैन वाशिंगटन में एक अजनबी की भांति अनुभव करने लगा। वह अपने भाई जार्ज के पास चला आया जो न्यू जरसी में अपनी मां के साथ रह रहा था। कुछ दिनों के बाद ही उसके जीवन को सबसे बड़ा आघात लगा। उसकी माता जिसकी वह देवी की भांति पूजा करता था, मर चुकी थी। वाशिंगटन में उसकी नौकरी किसी दूसरे को दे दी गई थी। ह्विटमैन फिर कभी वाशिंगटन नहीं लौटा और न्यू जरसी स्थित कैमडेन में ही मृत्यु पर्यन्त रहा। उसके जीवन में फिर एक बार परिवर्तन हुआ। उसके मित्रों का दायरा टूटने लगा। लकवे ने उसे असमय में ही वृद्ध बना दिया। घोर निराशा की घटनायें उसके मन पर मंडराने लगी थीं। एडवर्ड डाउड को उसने अपनी इस निराशा की झलक इस प्रकार एक पत्र में दी थी "यदि तुम मेरी पुस्तक के बारे में दोबारा लिखो तो यह उचित होगा कि तुम इन महत्वपूर्ण तथ्यों को लिखो कि 'लीव्ज आफ ग्रास' और उसके लेखक की संयुक्त राज्य अमेरिका में किस प्रकार अवज्ञा हुई है। किस प्रकार प्रकाशकों ने उसका बहिष्कार किया है और किस प्रकार लेखक को अपनी आजीविका के साधनों से वंचित किया गया है क्योंकि उसने एक ऐसी पुस्तक की रचना की है।"

सन् १८७७ में ह्विटमैन की दशा अत्यधिक दयनीय हो गई थी। उसके पास आय के कोई साधन नहीं रहे थे। उसके भाई जार्ज ने यद्यपि अपने नव निर्मित घर में उसे स्थान देना चाहा तथापि उसने यह स्वीकार नहीं किया और उसने वहीं रहना पसन्द किया जहाँ कि वह रह रहा था। वह अपनी पुस्तकों की बिक्री से अपना जीवन यापन करना चाहता था। वह कैमडेन और फिलाडेलफिया के निकटवर्ती स्थानों में जाता और अपनी पुस्तकोंकी बिक्री करता। सन् १८७६ में उसके स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

खाली चक्कर लगाता तो वह आवश्यक रूप से मेरा साथ देता था। अपना काम समाप्त करने के बाद हम दोनों वाशिंगटन के एक होटल में साथ-साथ जाते। मुझे आज भी वह जगह ठीक तरह से याद है जहां मैं कोने में थककर सो जाया करता था और वाल्ट मुझे बिना दखल किये होटल के जीवन को निर्निमेष देखता रहता था। वह तब तक वहां रुका रहता था, जब तक कि होटल के बन्द होने का समय नहीं हो जाता और इसके बाद मुझे जगाकर चल देता था।"

जीवन के अन्तिम चरण में व्हिटमैन अपने आपको बेघरबार और एकाकी महसूस करने लगा। उसे अपने परिवार की याद सताने लगी। मृत्यु का वह भय जो उसके मस्तिष्क पर पिछले कई वर्षों से मंडरा रहा था, उसकी कविता में मुखर होने लगा। उसने अपनी वसीयत भी तैयार करली, यद्यपि इसके बाद वह २० वर्ष तक जिन्दा रहा और अपनी कविताओं को संवारता सजाता रहा। ५४ वर्ष की आयु में व्हिटमैन वाशिंगटन में एक अजनबी की भांति अनुभव करने लगा। वह अपने भाई जार्ज के पास चला आया जो न्यू जरसी में अपनी मां के साथ रह रहा था। कुछ दिनों के बाद ही उसके जीवन को सबसे बड़ा आघात लगा। उसकी माता जिसकी वह देवी की भांति पूजा करता था, मर चुकी थी। वाशिंगटन में उसकी नौकरी किसी दूसरे को दे दी गई थी। व्हिटमैन फिर कभी वाशिंगटन नहीं लौटा और न्यू जरसी स्थित कैमडेन में ही मृत्यु पर्यन्त रहा। उसके जीवन में फिर एक बार परिवर्तन हुआ। उसके मित्रों का दायरा टूटने लगा। लकवे ने उसे समय से पूर्व ही वृद्ध बना दिया। घोर निराशा की घटनायें उसके मन पर मंडराने लगी थी। एडवर्ड डाउड को उसने अपनी इस निराशा की झलक इस प्रकार एक पत्र में दी थी "यदि तुम मेरी पुस्तक के बारे में दोबारा लिखो तो यह उचित होगा कि तुम इन महत्वपूर्ण तथ्यों को लिखो कि 'लीव्ज आफ ग्रास' और उसके लेखक की अनुपम ढंग से अमेरिका में किस प्रकार अवज्ञा हुई है। किस प्रकार प्रकाशकों ने उसका बहिष्कार किया है और किस प्रकार लेखक को अपनी आजीविका के साधनों से वंचित किया गया है क्योंकि उसने एक ऐसी पुस्तक की रचना की है।"

सन् १८७७ में व्हिटमैन की दशा अत्यधिक दयनीय हो गई थी। उसके पास के कोई साधन नहीं रहे थे। उसके भाई जार्ज ने यद्यपि अपने नव निर्मित घर में उसे स्थान देना चाहा तथापि उसने यह स्वीकार नहीं किया और उसने वहीं रहना पसन्द किया जहाँ कि वह रह रहा था। वह अपनी पुस्तकों की बिक्री से अपना जीवन व्यतीत करना चाहता था। वह कैमडेन और फिलाडेलफिया के निकटवर्ती स्थानों में घूमता और अपनी पुस्तकों की बिक्री करता। सन् १८७६ में उसके स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

वह सुविधा पूर्वक बाहर निकल सकता था। सन् १८८१ में उसने "लीव्ज ग्राफ ग्रास" के आगामी संस्करण की व्यवस्था के लिए बोस्टन की यात्रा की और अंत में उसे पहली बार एक अच्छा प्रकाशक मिला। जेम्स आर० ग्रासेगुड नामक प्रकाशक ने उसकी पुस्तक को छापना स्वीकार कर लिया। व्हिटमैन के साहित्यिक जीवन की यह महत्वपूर्ण घटना थी। पुस्तक को बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया गया और उसकी लगभग २००० प्रतियां बेची गई, किन्तु उसके दुर्भाग्य ने यहां भी साथ नहीं छोड़ा और व्यवसायिक दृष्टि से इसका प्रकाशन बहुत अधिक लाभदायक नहीं रहा। किन्तु इससे एक बड़ा लाभ यह हुआ कि इतने बड़े प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान द्वारा पुस्तक प्रकाशित होने से उसकी महत्ता बहुत अधिक बढ़ गई। नवम्बर १८८१ में 'न्यूयार्क सन" में उसकी पुस्तक की समीक्षा करते हुऐ एक आलोचक ने इस प्रकार लिखा "इस सुप्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान द्वारा 'लीव्ज ग्राफ ग्रास' का प्रकाशन व्हिटमैन के साहित्यिक जीवन की एक युगान्तरकारी घटना है। यह अवश्यम्भावी था कि उसकी प्रतिभा का लोहा साहित्य जगत में देर सबेर से माना ही जाता, किन्तु इस कार्य में लगभग एक चौथाई शताब्दी का विलम्ब हुआ है। वाल्ट व्हिटमैन के पाठकों की संख्या इस बीच काफी होगई, इस तथ्य के बावजूद भी कि उसने कथ्य के कतिपय औचित्यों की अवहेलना की है। किन्तु यह नया भव्य संस्करण कवि की एक महान् विजय है क्योंकि उसने जो कुछ लिखा था उसमें आज भी न तो कोई परिवर्तन किये हैं और न किसी अंश को हटाया गया है। उसने अपना कोई अपराध भी स्वीकार नहीं किया है"। इस प्रकार की अनुकूल समीक्षा के साथ ही "न्यूयार्क ट्रिब्यून" में नितान्त प्रतिकूल समीक्षा भी प्रकाशित हुई। कवि पर बड़ी पुरानी आरोप लगाया गया। उसकी जी खोलकर भर्त्सना की गई और पुस्तक के दमन की कार्यवाही तेजी से चल पड़ी। फिलाडेल्फिया के "अनैतिकता एवं अवगुण दमन संघ" ने पुस्तक को अश्लील साहित्य की सज्ञा दी और उसके प्रचार को रोकने के लिए आन्दोलन उठाया। 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' में यहाँ तक लिखा कि व्हिटमैन एक अक्खड़, अशिष्ट, अहंकारी और आलसी मनुष्य है। इसका एक परिणाम यह हुआ कि पुस्तक की मांग बोस्टन, फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क में बढ़ गई। फिर भी प्रकाशकों ने उसे पुनर्मुद्रित करने से इन्कार कर दिया और मुद्रण-प्लेट्स लेखक को लौटा दी। व्हिटमैन ने इसके आगामी संस्करण की व्यवस्था फिलाडेलफिया से की और रीज वेल्स एण्ड क० ने १८८२ में इसका नया संस्करण प्रकाशित किया। सन् १८८८ में डेविड मेके द्वारा व्हिटमैन के जीवन काल में इसका अन्तिम संस्करण प्रकाशित हुआ।

६५ वर्ष की आयु में व्हिटमैन न्यूजरसी स्थित कैमडेन नामक स्थान पर एक ऐसे मकान में रहने लगा जिसमें प्रकाश और वायु की कोई व्यवस्था नहीं थी।

गर्मी मे उसमें असहनीय गर्मी और सर्दी में भयानक शीत सताता था। कमरे की खिड़कियां पुराने पत्रों और पुराने अखबारों से बन्द करनी पड़ती थी। वातावरण बड़ा मलीन था। रेलवे क्रासिंग के पास होने से गाड़ियों की आवाज और निकट की एक फर्टीलाइजर फैक्टरी की बदबू हर समय पीड़ित करती रहती थी। सन् १८८४ में इसने किसी तरह से एक मकान खरीदा। यह मकान पहले एक मजदूर परिवार का था जिसे ह्विटमैन ने अब अपना किरायेदार बना लिया था। जब यह परिवार चला गया तो ह्विटमैन के घर में केवल उसके बिस्तर, एक कुर्सी जो उसके पिता ने उसके लिए बनाई थी और एक पुस्तकों का बक्स मात्र रह गये थे। एक वर्ष बाद एक नाविक की विधवा श्रीमती मेरी ओ डेविस को किसी प्रकार उसने घर में रहने को राजी कर लिया। इस महिला ने न केवल घर की व्यवस्था ही की बल्कि वृद्ध कवि की सेवा सुश्रूषा भी जी भर के की। ह्विटमैन अभी पूर्ण रूप से विकलांग नहीं था, तथापि उसे पूर्ण रूप से अपने मित्रों की आर्थिक सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था। अंग्रेज कवि रोबर्ट बुचमैन जिससे उसने एक बार केमडेन में भेंट की थी, कवि की इस दुर्दशा से बड़ा करुणार्द्र हुआ और उसने इंगलैंड में अपने मित्रों से कवि की सहायता का अनुरोध किया। कवि के प्रशंसकों ने कुछ धन इकट्ठा किया और उसे भेंट स्वरूप भेजा। उसके अन्य अमेरिकन शुभ चिन्तकों ने फिलाडेलफिया में लिंकन पर एक भाषण करवाया। इसकी टिकट बेचने से जो आय हुई उसमें कुछ और जोड़कर लगभग ७०० डालर कवि को भेंट किये। सितम्बर १८८५ में उसके ३२ प्रशंसकों ने प्रति १० डालर देकर कवि के लिए एक घोड़े और बग्घी की व्यवस्था की जिसमें बैठकर वह अक्सर भ्रमण के लिए जाया करता था। अपने ६६ वें जन्म दिन के ४ दिन बाद ह्विटमैन को पुनः लकवे का आक्रमण हुआ, आर्थिक कठिनाईयां बढ़ी और उसे वह घोड़ा और बग्घी बेचने के लिए भी विवश होना पड़ा। वह अब अपंग, लकवे से पीड़ित था, फिर भी उसके ७० वें जन्म दिन पर जो सार्वजनिक समारोह उसके सम्मान मे किया गया, उसमें वह उपस्थित था।

अपनी मृत्यु से कुछ ही दिनो पहले ह्विटमैन ने एक प्लाट खरीदा और अपना एक विशाल मकबरा बनाने का आदेश दिया। मकबरे का डिजाइन विलियम ब्लेक के एक ड्राइंग पर आधारित था। मकबरे के निर्माण में २५०० डालर से भी अधिक व्यय हुआ। सन् १८९१ के दिसम्बर में उसे निमोनिया हो गया और उसे असाध्य टीबी हो गई, फिर भी शीतकाल तक किसी प्रकार वह अपने जीवन की गाड़ी घसीटता रहा। आखिर २६ मार्च, १८९२ को अमरीका का यह महान कवि इस संसार से विदा हो गया। लोगों ने जब उसकी मृत्यु के बाद उसका वसीयतनामा पढ़ा तो यह जानकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि इस दरिद्र कवि के पास उसके कापीराइट और

अन्य अचल सम्पत्ति के अतिरिक्त ६००० डालर नकद भी था। उसकी अन्त्येष्टि क्रिया भी बड़ी विचित्र प्रकार से हुई। प्लेटो, बुद्ध, कनफ्यूशियस और यीशु के उपदेशों के अंश उसके अन्तिम संस्कार के समय सुनाये गये। कुरान और दूसरे धर्म-ग्रन्थों के उद्धरण उच्चारित किये गये। अन्तिम संस्कार की रिपोर्ट बड़ी सुर्खी के साथ समाचार पत्रों में प्रकाशित की गई। कुछ वर्षों बाद अंतिम संस्कार की इस घटना को भी एक आख्यान का रूप दे दिया गया। 'वाल्ट व्हिटमैन इन रशिया' शीर्षक से सितम्बर, १६३४ मे 'अमेरिकन मरकरी' में एलबर्ट पेरी ने एक लेख लिखा जिसमे उसने मास्को की 'बुलेटिन आफ लिटरेचर' से निम्न उद्धरण दिया था "व्हिटमैन की वसीयत के अनुसार एक बड़ा भारी लकड़ी का घर खरीदा गया जिसे तीन भागों में बांटा गया। एक में कवि का मृत शरीर रखा गया, दूसरे में अमरीका की लोकप्रिय ग्रामीण खाद्य-सामग्रियां रखीं गई और तीसरे में ह्विस्की, बीयर, लेमोनेड और पानी के पात्र रखे गये। लगभग ३५०० आदमियों ने जिनमें बच्चे, बूढ़े, औरतें सभी थे, बिना बुलाये भाग लिया। तीन प्रकार के वाद्य-वृन्द बारी-बारी से बजाये गये। अन्तिम संस्कार में भाग लेने वाले इन लोगों में व्हिटमैन के मित्र, कवि, पत्रकार, राजनीतिक नेता, भूतपूर्व सैनिक और सिविल वार के वे विकलांग सैनिक भी थे, जिनकी सेवायें व्हिटमैन ने अस्पतालों की थीं। इसके अतिरिक्त ट्रोली कारों के कन्डक्टर, काले नीग्रो, लेखक की भूतपूर्व प्रेयसियां, उसके साथी और उसकी जन्म भूमि के अनेक मछुए उपस्थित थे।" लेख में इस प्रकार की अनर्गल और मनचीती बातें भी कही गई थी "मृत्यु संस्कार की इस घड़ी में व्हिटमैन के अनेकों नाजायज बच्चे भी अपनी काली और श्वेत माताओं के साथ देखे जा सकते थे।" इस प्रकार व्हिटमैन का जीवन एक अविश्वसनीय कल्पना-जगत् की वस्तु बना दिया गया।

व्हिटमैन का विचार-वैभव

वाल्ट व्हिटमैन के व्यक्तित्व के तीन पक्ष थे। वह पत्रकार, देश-भक्त और कवि था। पत्रकार के रूप में उसने जो यात्रा वर्णन और डायरियां लिखी हैं वे उसकी गद्य लेखन की असाधारण क्षमता की द्योतक हैं। देश भक्त के रूप में उसने जो अनेक भाषण दिये वे साहित्य की दृष्टि से [illegible] ही किन्तु इस दृष्टि से उनका महत्त्व और भी [illegible] सामाजिक, राजनैतिक एवम् प्रशासनिक [illegible] । वाल्ट व्हिटमैन लोकतन्त्र के कट्टर समर्थक थे। [illegible] भी आपात उनके [illegible] स्वरूप को

देखकर ग्रपनी ग्रात्म-वेदना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा था 'मेरे विचार में संयुक्त राज्य ग्रमेरिका में हृदय का ऐसा खोखलापन पहले कभी नहीं था। ऐसा लगता है जैसे सच्ची निष्ठा ग्रौर तथ्यों ने हमसे किनारा कर लिया है। राज्य के ग्राधारभूत सिद्धान्तों में निष्ठा पूर्वक ग्रौर सच्चाई से विश्वास नहीं किया जाता ग्रौर न ही मानवता में विश्वास किया जाता है। यदि कोई तत्वान्वेषी दृष्टि इस सारे ग्रावरण को भेद कर देखे तो हृदय विदारक दृश्य दृष्टिगोचर होंगे। हम लोग चारों ग्रोर से ढोंग भरे वातावरण मे रह रहे हैं। ग्रादमी ग्रौरतों पर विश्वास नहीं करते ग्रौर ग्रौरतें ग्रादमियों पर विश्वास नहीं करतीं। साहित्य के क्षेत्र में एक घृणास्पद छिछलापन राज्य कर रहा है। नाना प्रकार के चर्च ग्रौर सम्प्रदाय धर्म के नाम पर बढ़ा रहे हैं। ग्रमरीका की राष्ट्रीय ग्रौर राज्य सेवाग्रों ग्रौर म्युनिसिपल सेवाग्रों में केवल न्यायिक सेवाग्रों को छोड़कर सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है। घूसखोरी ग्रौर कुशासन चारों ग्रोर फैल रहा है। न्यायिक शक्ति को भयभीत किया जाता है। बड़े नगरों मे गुंडागर्दी ग्रौर लूट खसोट मच रही है। फैशन परस्त जीवन में दुश्चरित्रता ग्रौर प्रदर्शन बढ़ रहा है। व्यापार के क्षेत्र मे एक मात्र उद्देश्य येन केन प्रकारेण धन लाभ करना रह गया है। जिसे हम ग्रपने यहां का सर्वोच्च वर्ग मानते हैं, वह एक फैशनेबुल कपड़े पहने हुए तमाशबीनों का समूह है। लेकिन यह भी सत्य है कि समाज के इस बहिरंग स्वरूप के विपरीत कुछ ठोस वस्तुऐं भी हैं। इसके बावजूद कि कठिन श्रम करने वाले श्रमिकों की भी कमी नहीं, फिर भी जो कुछ सत्य है क्या वह ग्रसत्य नहीं। मैं कहता हूं कि हमारी इस 'नई दुनिया' का लोकतंत्र चाहे सर्व हारा वर्ग को ग्रपने घरौंदों से निकालने ग्रौर उनके भौतिक उत्थान ग्रौर उत्पादन की दृष्टि से चाहे कितना ही सफल रहा हो, किन्तु यह सामाजिक, धार्मिक, नैतिक ग्रौर ग्राध्यात्मिक परिणामों की दृष्टि से लगभग पूर्णत: ग्रसफल रहा है।"

उनके द्वारा लिखे गये पत्र जिनमें से ग्रधिकांश ग्रपनी मां को लिखे थे, साहित्य की दृष्टि से ग्रौर उनके ग्रन्तर्मन की गुत्थियों को समझने की दृष्टि से बड़े महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं।

कवि के रूप में व्हिटमैन की सर्वाधिक प्रशंसा उनके समकालीन कवि एमर्सन से मिली। 'लीव्ज ग्राफ ग्रास' के प्रथम संस्करण पर ग्रपना मत व्यक्त करते हुए एमर्सन ने व्हिटमैन को इस प्रकार लिखा था "प्रिय महोदय, लीव्ज ग्राफ ग्रास के रूप में ग्रापने ग्रद्भुत ग्रन्थ की जो ग्राश्चर्यजनक उपहार दिया है उसके महत्व के प्रति मैं ग्रपनी ग्रांखें नहीं मूंदी है। मेरे विचार में यह एक ग्रसाधारण बौद्धिक कृतित्व है जो ग्रमरीका के लिए ग्रमूल्य है। इसे पढ़कर मुझे भी ग्रानन्द प्राप्त

हुआ है, वह अतुलनीय है। मैं आपको साहित्यिक जीवन के इस महान आरम्भ पर बधाई देता हूं। आपके इस असाधारण कृतित्व को देखकर मैंने अपनी आंखें यह देखने को मली कि यह रवि रश्मि जिसका कि मैं अनुभव कर रहा हूँ, कहीं धोखा तो नहीं है, किन्तु पुस्तक की सारगर्भिता और गाभीर्य ने मुझे आश्वस्त कर दिया। अभी पिछली रात तक जब मैंने समाचार पत्र मे आपकी पुस्तक का विज्ञापन देखा मुझे विश्वास नहीं हो सका कि यह कोई वास्तविक नाम था जिस तक किसी पोस्ट आफिस के द्वारा पहुंचा जा सकता है। मेरी तीव्र लालसा है कि न्यूयार्क आकर मैं एक बार आपके दर्शन करूं।"

इस प्रकार एक और अमरीका के एमर्सन जैसे महान कवि ने व्हिटमैन की प्रतिभा को स्वीकारा है तो दूसरी ओर इंग्लैंड मे विलियम रोजेटी ने सन् १८६६ मे अपनी देख रेख में व्हिटमैन की कविताओं का संग्रह छपवाकर अपने देश के साहित्य जगत को उसकी प्रतिभा से परिचित कराया। मिसेज एनीगिल नामक एक महिला ने मई, १८७० में 'बोस्टन रैडीकल' में अपना एक लेख 'एन इंगलिश वूमैन्स एस्टीमेट आफ वाल्ट व्हिटमैन' शीर्षक से छपाकर व्हिटमैन के गौरव में असाधारण वृद्धि की। व्हिटमैन के समर्थकों को इससे बड़ा बल मिला क्योंकि यह एक ऐसी महिला द्वारा लिखा गया था जो बड़ी प्रतिष्ठित थी। एक प्रकार से श्रीमती गिल क्राइस्ट का यह आलोचनात्मक लेख उनका यह पहला प्रेम पत्र था। श्रीमती गिल क्राइस्ट एक चार बच्चों वाली विधवा थीं। वे व्हिटमैन की कविताओं पर इतनी मुग्ध हो गईं कि वे वर्षों तक उन्हे प्रेम पत्र लिखती रही और व्हिटमैन के बहुत मना करने पर भी सितम्बर, १८७६ में अपने बच्चों को लेकर फिलाडेलफिया आ गई। वे कवि की पत्नी तो न बन सकी परन्तु जीवन भर उनकी घनिष्ठ मित्र अवश्य बनी रही।

व्हिटमैन की कविताओं का विषय वस्तु बड़ी विविध रंगी है। जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाओं और प्रसंगों को उन्होंने अपनी कविताओं को विषय बनाया है। एक ओर वे पथ पर चलते अनजान बटोही को सम्बोधित करते हैं तो दूसरी ओर वे निर्जीव पुस्तकालयों को भी अपने मन की बातें सुनाने को आतुर हो उठते है। सैनिक जीवन, प्रकृति की इन्द्रधनुषी सुषमा, चांद सितारे, खुली सड़क, मनहट्टन की जन समुद्र से सहराती गलियां, परेड करते हुए सिपाही, जीवन और मृत्यु की दार्शनिक व्याख्या, मृत सम्राटों के मकबरे सभी कुछ उनके काव्य सृजन के प्रेरणा स्रोत बने। विषय की ऐसी विविध रंगी छटा विरले ही कवियों में होती है। व्हिटमैन काव्य मे बहुत सरल तरल शब्द रचना के समर्थक थे। उनके काव्य में कहीं उलझन भरी अथवा पेचीदा अभिव्यक्ति नहीं मिलती। गद्य की सी स्पष्टता उनके काव्य की

विशिष्टता है। यद्यपि प्रारंभ में उन्होंने तुकान्त छन्द भी लिखे थे तथापि आगे चलकर उन्होंने अपने स्वच्छन्द छन्दों का निर्माण किया जो परम्परागत छन्द रचना से बिल्कुल भिन्न थे। मुक्त एवं अतुकान्त होने पर भी इन छन्दों में असाधारण लय और गति है जो पाठकों को एक सहज संगीतात्मक प्रवाह में बहा ले जाती है। आगे के पृष्ठों में उनकी कुछ ऐसी ही रचनाओं का भावानुवाद प्रस्तुत किया गया है।

पद्य-खण्ड

पाठक से !

प्रिय पाठक ! स्पन्दित तुझ में
मुझ सी ही जीवन की धड़कन !

तू भी ओत-प्रोत मुझ जैसा
स्वाभिमान के सहज स्वभाव से !

तेरे अन्तर में भी बहती
मुझ जैसी स्नेहिल रस-धारा !

इसीलिए अग्रिम पृष्ठों पर
अंकित जो है गीत अनेकों
वे करता हूं तुझे समर्पित !

• • •

ओ गर्वीले पुस्तकालयो !

ओ गर्वीले पुस्तकालयो !
करो न अपने द्वार बन्द तुम !
क्योंकि तुम्हारी ये अलमारी
जो कि खचाखच भरी हुई है,
किन्तु अभाव ग्रस्त ये जिससे,
जिसको इन्हें जरूरत है अति
लो मैं तुम्हें वही देता हूं !
लिखी एक उद्‌भूत युद्ध से
पुस्तक मैंने ऐसी जिसके—
शब्द नहीं हैं कुछ भी लेकिन-
मतलब भरा बहुत है जिसमें !
यह पुस्तक सबसे है न्यारी
नहीं शृंखला में है आती
शेष पुस्तकों के यह संग में
और न जिसको है स्वीकारा
बुद्धिजीवियों के समूह ने !
किन्तु अरी ओ ! मूक-अनकही
तुम प्रच्छन्नताओ ! कर दोगी-
पुलकित इसके हर पन्ने को !

०००

आने वाले कवियों के नाम

आगामी युग के हे कवियो !
वक्ताओ ! मीठे स्वर-कारो !
नहीं समय है आज कर सकूं
सिद्ध स्वयं को न्यायोचित मैं !
अथवा यह बतलाऊं जग को
जीता मैं किस हेतु धरा पर !
पर तुम भावी कर्णधार हो !
मातृ-भूमि के बेटे हो तुम !
तन-मन दोनों से ऊर्जस्वित !
तुम महान हो ! ऐसे जैसे
हुए नहीं थे कभी भूत में !
जागो-जागो ! रे तुम जागो !
सिद्ध करो न्यायोचित मुझको !
मैं तो लिखता हूं बस केवल
दो संकेत-शब्द भावी के !
मैं बढ़ता हूं केवल पल भर
गति देने इस काल चक्र को !
और तिमिर में फिर कर देता
लोन स्वयं को पलक मूंदते !
मैं हूं ऐसा जो चलता हूं
रुके हुए बिन पूर्ण रूप से
और दृष्टि आकस्मिक कोई
कभी डाल लेता हूं तुम पर
और विमुख हो जाता हूं फिर !
तुम पर ही मैं छोड़ रहा हूं
इसे सिद्ध करना, या देना-
परिभाषा इसकी अनजानी !
शेष कार्य जो मुख्य, तुम्हीं से-
पूरा होगा, आशा मुझको !

□

ओ गर्वीले पुस्तकालयो !

ओ गर्वीले पुस्तकालयो !
करो न अपने द्वार बन्द तुम !
क्योंकि तुम्हारी ये अलमारी
जो कि खचाखच भरी हुई है,
किन्तु अभाव ग्रस्त ये जिससे,
जिसकी इन्हें जरूरत है अति
लो मैं तुम्हें वही देता हूं !
लिखी एक उद्‌भूत युद्ध से
पुस्तक मैंने ऐसी जिसके—
शब्द नहीं हैं कुछ भी लेकिन-
मतलब भरा बहुत है जिसमें !
यह पुस्तक सबसे है न्यारी
नहीं शृंखला में है आती
शेष पुस्तकों के यह सग में
और न जिसको है स्वीकारा
बुद्धिजीवियों के समूह ने !
किन्तु अरी ओ ! मूक-अनकही
तुम प्रच्छन्नताओ ! कर दोगी-
पुलकित इसके हर पन्ने को !

●●●

आने वाले कवियों के नाम

आगामी युग के हे कवियो !
वक्ताओ ! मीठे स्वर-कारो !
नहीं समय है आज कर सकूँ
सिद्ध स्वयं को न्यायोचित मैं !
अथवा यह बतलाऊं जग को
जीता मैं किस हेतु धरा पर !
पर तुम भावी कर्णधार हो !
मातृ-भूमि के बेटे हो तुम !
तन-मन दोनों से ऊर्जस्वित !
तुम महान हो ! ऐसे जैसे
हुए नहीं थे कभी भूत में !
जागो-जागो ! रे तुम जागो !
सिद्ध करो न्यायोचित मुझको !
मैं तो लिखता हूं बस केवल
दो संकेत-शब्द भावी के !
मैं बढ़ता हूं केवल पल भर
गति देने इस काल चक्र को !
और तिमिर में फिर कर देता
लीन स्वयं को पलक मूंदते !
मैं हूं ऐसा जो चलता हूं
रुके हुए बिन पूर्ण रूप से
और दृष्टि आकस्मिक कोई
कभी डाल लेता हूं तुम पर
और विमुख हो जाता हूं फिर !
तुम पर ही मैं छोड़ रहा हूं
इसे सिद्ध करना, या देना-
परिभाषा इसकी अनजानी !
शेष कार्य जो मुख्य, तुम्हीं से-
पूरा होगा, आशा मुझको !

□

सुना सांझ को जब मैंने यह

सुना सांझ को जब मैंने यह
संसद के सदनों में कैसे
मेरी मुखरित हुई प्रशंसा!
कीर्ति-पताका फहरी कैसे!
फिर भी आने वाली रजनी
नहीं सुखद थी मेरे मन को।
औ' जब मैंने अपने घर पर
मधु की दी दावत मित्रों को
अथवा मेरी सकल योजना
फलीभूत हो गई सहज जब।
तब भी हर्ष-हिलोर एक थी
उठी नहीं मेरे अन्तर में।
किन्तु उस दिवस जबकि भोर में
ऊर्जस्वित जीवन-स्पन्दन ले,
शैया तज मैं उठा स्फुरित हो,
फिर से लेकर नई मधुरिमा!
गीत गुनगुनाता होठों से
औ' ऊष्मामय श्वास सूंघते
हेमन्ती ऋतु की रस भीनी।
देखा मैंने जब पश्चिम में
पूर्ण चन्द्र को निष्प्रभ होते
लय करते अस्तित्व स्वयं का

ऊषा के रक्तिम प्रकाश में।
जब मैं भटका सरित-कूल पर
एकाकी हो! अनावृत्त हो–
स्नान किया जब मैंने शीतल–
जल से हंसते और खेलते
और उदय देखा सूरज का!
और किया चिन्तन जब मैंने
कैसे मेरा मीत बटोही
आता होगा अपने पथ पर।
आह! तभी बस मैं प्रफुल्ल था।
मेरी तब हर सांस मुझे थी
हुई मधुर से और मधुर तर
और उस दिवस मेरा भोजन
लगा अधिक था पोषण देता।
इसी तरह बस हंसते गाते
बीत गया वह दिवस सुनहला।
और दूसरा दिवस आ गया
वैसा ही आनन्द लिए फिर।
अगले दिन संध्या को फिर तो
आ पहुँचा था मीत हृदय का,
और उसी रजनी को, जब थीं–
पूर्ण रूप से शान्त दिशायें
तभी सुनाई दिया मुझे था
जल का कल-कल नाद तटों पर।
श्रवण किया मैंने था गुनगुन–
करते वारि रेत का

जैसे मन्द मधुर इस स्वर में
वह करता मेरा अभिनन्दन !
क्योंकि जिसे मैं सहज भाव से
करता प्यार प्राण से बढ़कर
वह शीतल रजनी में मेरी
चादर में आकर सोया था।
सिमटे-सिमटे थे दोनों हम।
हेमन्ती उस स्तब्ध निशा में
सुधर चांदनी में न्हाया सा
उसका मुख था उन्मुख मेरे।
और बांह थी उसकी मेरे–
पड़ी वक्ष पर अल्हड़ता से।
और वही थी निशा कि जिसमें
रोम-रोम था हर्षित मेरा !

———

नये व्यक्ति हो क्या तुम

नये व्यक्ति हो क्या तुम मेरी ओर खिंचे जो,
तो फिर करता मैं सचेत हूं तुमको पहले !
मैं निश्चित हूं बहुत भिन्न उससे जो मेरे-
बारे में अनुमान लगाये तुम बैठे हो !
क्या यह है कल्पना तुम्हारी मुझ में तुमको-
मिल पायेगा कहीं तनिक आदर्श स्वयं का ?
क्या तुम सोच रहे हो अपने अन्तर में यह
सरल बहुत है मुझे तुम्हारा मीत बनाना ?
क्या खयाल है मित्र-भावना मेरी तुमको
पूर्ण शुद्ध सन्तोष कहीं कुछ दे पायेगी ?
क्या तुम यह करते हो विचार अपने मन में
मैं विश्वासी और भरा-पूरा निष्ठा से ?
क्या मेरे इस स्निग्ध, सहिष्णु व्यवहार मात्र से-
आगे तुमको नहीं दिखाई पड़ता कुछ भी ?
क्या तुमको होता प्रतीत यह तुम बढ़ते हो
सचमुच किसी वीर से मिलने सत्य-धरा पर !
अरे स्वप्न द्रष्टा ! न किया तुमने यह चिन्तन
यह सब हो सकती है केवल माया-छलना !

———

खुली सड़क का गीत

(१)

शान्त चित्त से, पद-तल धरते
मैं आया हूं खुली सड़क पर!
मेरे सम्मुख पड़ा हुआ है
स्वस्थ-मुक्त संसार विशद यह!
मेरी आंखों आगे दिखता
दूर दूर तक मटमैला पथ!
जो मुझको ले जा सकता है
मैं चाहूं जिस ओर भूमि पर!

इससे आगे मैं न पूछता
बात भाग्य के भले–बुरे की
मूर्तिमान सौभाग्य स्वयं मैं!
इससे आगे नहीं तनिक भी
मैं क्रन्दन करता वाणी से!
नहीं स्थगित करता कुछ हूं
नहीं मुझे दरकार रही कुछ!
घर की घनीभूत पीड़ा से
पुस्तकालयों और कटीली–
तीक्ष्ण समीक्षाओं से अब मैं
मुक्ति पा चुका पूर्ण रूप से!
अब सशक्त-सन्तुष्ट सहज हो
मैं चलता हूं खुली सड़क पर!

यह धरती पर्याप्त मुझे है
नहीं चाहिए निकट मुझे अब
यह झलमल करता तारक-दल!
वे है जहां वहीं अच्छे हैं!

यह मुझको है ज्ञात, उन्हीं
हित वे हैं पर्याप्त ! कि जिसक
उन पर है स्वामित्व अखंडित !
फिर भी यहां लिए चलता मैं
वे सब बोझे मृदुल पुराने
हां मै उन सबको ढोता हूं !
वे जितने भी हैं नर-नारि
उनको साथ लिए चलता हू
जहा कहीं भी मैं जाता हूं !
मैं खाता सौगन्ध, मुझे है-
बहुत असभव, उन्हें त्यागना !
वे है मुझ में व्याप्त और मैं-
बदले मै व्यापूंगा उनमें !

(२)

अरी सड़क ! मैं तुझ पर चढ़कर
तेरे चारों ओर देख कर !
करता हूं विश्वास, नहीं तू-
इतनी ही केवल बस ! जितनी-
यहां दिखाई देती मुझको !
मेरा यह विश्वास कि तुझ में
बहुत अदेखा भी है गुम्फित !
यहां गूंजते हैं सबके ही-
स्वागत-गान समान भाव से
नहीं प्राथमिकता मिलती है
यहां किसी को ! और किसी को-
दी जाती है कभी अस्वीकृति !
ऊनो सिर के कृष्ण - काय को
अपराधी को, और अज्ञ को
कभी यहां इन्कार नहीं है !
यहां लपकते और लपकते

चिकित्सकों के पीछे चलते !
शिशु नवजात लिए गोदी में !
भारी कदमों से चलती सी
भिखमंगे लोगों की टोली !
और लड़खड़ाते चरणों से
चलने वाले मद्यप कितने !
हंसी दिल्लगी करने वाले
मिस्तिरियों के जन-समूह भी !
भागे युवक, धनिक की गाड़ी
फटे हाल कोई दीवाना !
या कि भागने वाले प्रणयी
औ' सौदागर सुबह-सुबह का !
किसी मृतक की चलती अर्थी !
कस्बे से आता औ जाता
फर्नीचर का ढेर असीमित !
ये सब गुजर – गुजर जाते हैं !
गुजर यहां जाता हर कोई
मैं भी गुजर इधर से जाता !
नहीं किसी को रोका जाता !
अपनाया जाता न किसी को
मुझे नहीं कोई भी प्रिय है !

(३)

अरी हवा तू ! जो कि दे रही
मुझको मुखरित रखने श्वासें !
औ उपकरणो ! जो बटोरते–
मेरे अस्त व्यस्त चिन्तन से
तुम कुछ अर्थ भरी सी बातें !
और रूप देते हो उनको !
अरी ज्योति ! तू जो कि कर रही
किरण-वृष्टि मुझ पर औ' जग की–
सभी वस्तु पर एक भाव से !

अरे सड़क के इर्द-गिर्द तुम
ऊबड़ – खाबड़ पड़े रास्तो !
मुझको है विश्वास कि तुम सब
प्राणवान हो, अनदेखे निज–
अस्तित्वों से ओत – प्रोत अति
तुम मुझको सचमुच हो प्रिय हो !

ओ नगरों के शान्त मार्गो !
अरे मोड़ पर पड़ने वाले
सुदृढ़ चक्करदार घुमाओ !
अरी तरणियो ! ओ मस्तूलो !
ओ लहरों पर तिरते तख्तो !
ओ सुदूर-गामी तुम पोतो !
ओ भवनों की दीर्घ कतारो !
ओ वातायन वाले कक्षा !
अरी ! जालियो ओ महराबो !
अरे सिंहद्वारों ! ओ खम्भो !
ओ लोहे के प्रबल फाटको !
ओ दरवाजो ! अरी सीढ़ियो !
पगडंडी के ओ पाषाणो !
अरे पद दलित तुम चौराहो !
उस सबसे, जिसने भी तुमको
किया परस निज कर से छूकर !
मेरा है विश्वास कि तुमने
किया ग्रहण है उस सब कुछ को !
अरे वही फिर गोपन विधि से
मुझको तुम दोगे यह निश्चित !
जीवित और मृतक लोगों से
पूरित जो कि धरातल अपने
वे सब औ' उनकी आत्माएं
सानुकूल, साकार स्वयं ही
होंगी मेरे सम्मुख आकर !

(४)

फैल रही है दायें – बांये
दोनों ओर दूर तक धरती !
प्राणवान है इसकी प्रतिछवि
हर कोना जगमग करता है
ज्योतिर्मय हो पूर्ण प्रभा से !
जन-पथ की उत्फुल्ल मधुर ध्वनि
और स्फुटित सुखद भावना !
बहती बन संगीत – निर्भरी
जहां कामना होती इसकी
औ' रुक जाती वहां जहां पर
नहीं चाहता इसको कोई !
अरे दीर्घ पथ ! मैं चलता जब .
क्या तुम मुझसे यह कहते हो
'विलग नहीं तुम होओ मुझसे'
क्या तुम मुझसे यह कहने की
हिम्मत या साहस करते हो !
'मुझसे विलग अगर तुम होते
तुम खो जाते दिशा–भ्रमित हो !'
क्या तुम यह कहते हो मुझसे ?
'मैं पहले से ही प्रस्तुत हूं
घिसा पिटा हूं अच्छा खासा
मुझे सभी ने है अपनाया
लगन लगाओ तुम भी मुझसे'
ओ जन–पथ ! मैं फिर कहता हूं
विलग न होने का भय मुझको !
फिर भी तुम्हें प्रेम करता हूं
तुम मुझको करते हो व्यंजित
इससे ज्यादा, जितना मैं भी
कर पाता हूं नहीं स्वयं को !
तुम मुझको होओगे अपनी–
कविता से भी बढ़कर प्रिय अति !

मैं सोचा करता हूं जग के-
सारे शौर्य - पराक्रम पूरित-
करतब औ' स्वच्छन्द गीत सब
सदा जनमते खुली हवा में !
यही सोचता - मैं अपने को
भांति भांति के कई करिश्मे !
मैं सोच करता हूं पथ पर-
जिससे भी मैं कभी मिलूंगा
वह पसन्द आयेगा मुझको
और गहेगा मेरा कर जो
वही मुझे चाहेगा मन से !
मैं सोचा करता हूं जिससे
मेरी भेंट कभी भी होगी
वह मुझसे होगा प्रसन्न अति !

(५)

मैं जो रहा बहुत उच्छृंखल
डूबा कल्पित रेखाओं में !
अब करता हूं इसी घड़ी से
अपना नियमन और संयमन
अव मैं जहां कहीं भी जाता
अपना मैं रहता खुद स्वामी !
सुनता हूं सब कथन अन्य के
उन्हें समझता पूर्ण रूप से !
रुकता खोज-बीन करता फिर
औ' विचार विनिमय करता मैं
स्निग्ध भाव से पर दृढ़ता से
विलग सदा रखता हूं निज को
उन बन्धन-पाशों से हरदम
जो कि जकड़ सकते हैं मुझको !
अन्तरिक्ष के पवन - झकोरे
मैं सूंघा करता हूं कितने !

पूरब – पश्चिम, उत्तर – दक्षिण
सभी दिशायें अब मेरी हैं!
मैं विशाल हूँ उससे ज्यादा
जितना सोचा करता खुद को!
नहीं जानता था यह मन में
मुझमें इतनी भरी भलाई!
सब कुछ लगता मुझको सुन्दर!
मैं यह बार-बार कह सकता
पुरुषों से औ' महिलाओं से
'तुमने जो उपकार किया है
मेरे संग में, मैं उस सबका
वैसा ही प्रतिकार करूंगा।'
ज्यों ज्यों मैं चलता जाता हूँ
मैं फैला दूंगा अपने को
पुरुष और महिला – समूह में
एक नई हर्षातिरेकता
औ' सुदृढ़ता से उन सबको
भरे व्याप्त कर दूंगा मैं अब!
नहीं मुझे जो स्वीकारेगा
उससे मुझे न होगी पीड़ा!
औ' मुझको अपना लेगा (अथवा लेगी
उसको शुभ वरदान मिलेगा
और मुझे भी देगा वह वर!

(६)

यदि सहस्त्र परिपक्व पुरुष भी
अब जो मेरे सम्मुख आयें
मुझे नहीं होगा कुछ अचरज!
अब यदि सहस्त्र सुन्दरी बाला
मेरी आंखों आगे नाचें
मुझे न होगा तनिक अचम्भा!
अब मुझको यह रहस्य ज्ञात है

श्रेष्ठ व्यक्ति बनते हैं कैसे?
उनका होता सृजन स्वच्छ अति
खुली वायु में पोषण पाने
औ धरती पर शयन-लाभ से!
एक व्यक्तिगत महाकार्य के-
हेतु यहां है जगह अपरिमित
ऐसा कार्य अखण्डित जो इस
पूरे ही मानव-समाज के
मन को बांधे मोह-पाश में!
इसकी शक्ति और संकल्पों-
का प्रवाह कानून तोड़ता
और मजाक उड़ाता उन सब
अधिकारों का औ तर्कों का
जो विरोध में आते इसके!
यहां बुद्धि का होता निर्णय!
अन्तिम होती नहीं परीक्षा
कभी बुद्धि की स्कूलों में!
बुद्धिमान् कोई भी अपनी
बुद्धि न दे सकता है उसको
जो नितान्त है शून्य बुद्धि से!
बुद्धि अरे! है सचमुच आत्मा!
नहीं साक्षी उसे चाहिए
वह तो स्वयं साक्षी होती!
वह लागू ह तो हर स्थिति,
उद्देश्यों, गुणों के संग में
सारभूत साकार स्वयं वह!
वह है सत्यों की निश्चितता
उपकरणों की स्वयं अमरता!
वस्तु जगत की वह सुन्दरता!
औ वस्तुओं के दर्शन में
ऐसा कुछ है जो करता है
आत्मोद्गारों को उत्तेजित!

पूरब – पश्चिम, उत्तर – दक्षिण
सभी दिशायें अब मेरी हैं!
मैं विशाल हूं उससे ज्यादा
जितना सोचा करता खुद को!
नहीं जानता था यह मन में
मुझमें इतनी भरो भलाई!
सब कुछ लगता मुझको सुन्दर!
मैं यह बार-बार कह सकता
पुरुषों से औ' महिलाओं से
'तुमने जो उपकार किया है
मेरे संग में, मै उस सबका
वैसा ही प्रतिकार करूंगा।'
ज्यों ज्यों मैं चलता जाता हूं
मैं फैला दूंगा अपने को
पुरुष और महिला – समूह में
एक नई हर्षातिरेकता
औ' सुदृढ़ता से उन सबको
अरे व्याप्त कर दूंगा मैं अब!
नहीं मुझे जो स्वीकारेगा
उससे मुझे न होगी पीड़ा!
औ' मुझको अपना लेगा (अथवा लेगी)
उसको शुभ वरदान मिलेगा
और मुझे भी देगा यह वर!

(६)

यदि सहस्त्र परिपक्व पुरुष भी
अब जो मेरे सम्मुख आयें
मुझे नहीं होगा कुछ अचरज!
अब यदि सहस्त्र सुन्दरी बाला
मेरी आंखों आगे नाचें
मुझे न होगा तनिक अचम्भा!
अब मुझको यह रहस्य ज्ञात है

श्रेष्ठ व्यक्ति बनते हैं कैसे ?
उनका होता सृजन स्वच्छ ग्रति
खुली वायु में पोषण पाने
औ धरती पर शयन-लाभ से !
एक व्यक्तिगत महाकार्य के-
हेतु यहां है जगह अपरिमित
ऐसा कार्य अखण्डित जो इस
पूरे ही मानव - समाज के
मन को बांधे मोह - पाश में !
इसकी शक्ति और संकल्पों-
का प्रवाह कानून तोड़ता
और मजाक उड़ाता उन सब
अधिकारों का औ तर्कों का
जो विरोध में आते इसके !
यहां बुद्धि का होता निर्णय !
अन्तिम होती नहीं परीक्षा
कभी बुद्धि की स्कूलों में !
बुद्धिमान् कोई भी अपनी
बुद्धि न दे सकता है उसको
जो नितान्त है शून्य बुद्धि से !
बुद्धि ग्ररे ! है सचमुच आत्मा !
नहीं साक्षी उसे चाहिए
वह तो स्वयं साक्षी होती !
वह लागू ह तो हर स्थिति,
उद्देश्यों, गुणों के संग में
सारभूत साकार स्वयं वह !
वह है सत्यों की निश्चितता
उपकरणों की स्वयं अमरता !
वस्तु जगत की वह सुन्दरता !
औ वस्तुओं के दर्शन में
ऐसा कुछ है जो करता है
आत्मोद्गारों को उत्तेजित !

मैं यह शोक औ' कमी की
करता फिर हो गई तरीका !
वे मन भी सिद्ध हो सकते
आनन्द-वर्षों को सीमा से !
पर न सिद्ध हो सकते हैं वे
इन विस्तृत मेघों के नीचे !
इन सुरम्य दृश्यों औ बहती
जल-धारा के कूल-किनारे
यहाँ अरे ! सत्य का दर्शन !
यहाँ मिलाया जाता मानव !
यहाँ अरे ! वह करता अनुभव
जो गूढ़ उनमें अन्तर्हित है ।
भूत, भविष्य, प्रेम औ' गौरव
ये सब यदि रीते हैं तुमसे
तो तुम भी हो उनसे रीते !
केवल बस प्रत्येक वस्तु का
सार मात्र ही पोषण पाता !
कहाँ अरे वह मुझे बताओ ?
मेरे और तुम्हारे हित जो
भूसी करता दूर धान की !
कहां अरे वह जो कर देता
छलनाओं को पूर्ण निरर्थक
और हमारी करता रक्षा !
यहां अरे तन्मयता ऐसी
जो कि नहीं है पूर्व नियोजित
उपजी वह उपयुक्त क्षणों में !
अरे जानते हो क्या तुम यह
ऐसा क्या है, जो तुम जाते
प्रेम अपरिचित जन का पाते !
बात समझते क्या तुम नयनों–
की उन चंचल पुतलियों की रे ?

(७)

अरे उत्तर लो यह आत्मा का!
जो आता अपने भीतर से
सघन घनेरे द्वारों से हो
सदा उठाता प्रश्न अनेकों!
ये चाहें उठती क्यों मन में।?
ये विचार क्यों घिरते तम में ?
क्यो है ये ऐसे नर - नारी
जो कि निकट जब होते मेरे
मेरे मन को कर देती हैं
पुलकित सूर्य - रश्मियां सुन्दर
विलग वही जब मुझसे होते
तब क्यों मेरी हर्ष - ध्वजायें
भू-लुण्ठित हो जाती पल में!
खड़े हुए क्यों अरे विटप ये
जिनके नीचे कभी न चलता!
पर विशाल, मतवाले मुझ पर
तिरते आते शत विचार हैं
मेरा यह खयाल, वे लटके-
रहते सर्दी औ' गर्मी में
उन वृक्षों की शाखाओं मे
ओर उधर से जब मैं जाता
वे बरसा देते फल मुझ पर
ऐसा क्या है जिसका सहसा
विनिमय करता अजनवियों से ?
क्यां मिल जाता मुझे जबकि मैं
संग बैठ चलता चालक के ?
क्या मिल जाता उस मछुये से
जो कि खींचता होता अपन
जाल किनारे, जिसे देखकर
मैं चलता-चलता रुक जाता!

क्या मिल जाते मुझे किसी भी
नर – नारी को सद् के इच्छा
साथ मुक्त हो जाने भर से ?
और उन्हें क्या मिलता मेरे-
संग में यों स्वतन्त्र होने से ?

(८)

है आनन्द उत्स आत्मा का
यहां अरे आनन्द भरा है !
मेरा यह विचार कि यह है
खुली वायु में व्याप्त, युगों से
बाट जोहता प्रतिपल-प्रतिक्षण !
अब यह हममें हुआ प्रवाहित
हमें शक्ति उपयुक्त मिली है !
उन्नत होता यहां तरल औ'
अनुरागी रस भरा चरित रे !
यही चरित तो नर-नारी की
ऊर्जस्वितता और मधुरता !
वे निगूढ़, अनजाने शैशव-
से बाहर पग धरने वाले !
हंसमुख यात्री निज यौवन औ'
दाढ़ी – मूछों वाला पौरुष
लिये साथ में चलने वाले !
उषःकाल की वनस्पती ये
प्रतिदिन देती नहीं जड़ों से
अधिक स्फुरण और मधुरिमा
उससे बढ़कर अथवा चढ़कर
जितनी देती यह अपने ही
भीतर से अनवरत भाव से !
तरल और अनुरक्त चरित की-
ओर सदा बहते श्रम – सीकर
युवा – वृद्ध के युगल प्रेम के !

इससे ही छन-छन कर बहता
वह सम्मोहन जो कि उड़ाता-
क्रूर अरे, उपहास, मुखरता-
और अनेकों उपलब्धियों की !
इसी दिशा में आहें भरती
लेन-कामना-कम्पित पीड़ा !

(६)

साथी ! तुम चाहे कोई हो !
पथ पर चलो साथ तुम मेरे !
मेरे साथ-साथ चलने से
तुम्हें मिलेगा अरे वही सब
जो न कभी थकता जीवन में !
पृथ्वी कभी नहीं थकती है !
वह पहले दिखलाई पड़ती
शुष्क, मूक, दुर्बोध बड़ी ही
और प्रकृति भी प्रथम दृष्टि में
लगती नीरस औ" दुर्गम अति !
किन्तु नहीं तुम हिम्मत हारो
चलते रहो निरंतर साथी !
उनके भीतर आवृत होकर
हुए सुशोभित दिव्य वस्तुयें !
कसम तुम्हें मैं खाकर कहता
दैविक अरे वस्तुयें ये जो
हैं, उससे बढ़कर सुन्दरतर
जितना शब्द व्यक्त करपाते !
हमको यहाँ ठहरना साथी !
किञ्चित् नहीं अभीष्ट अरे है !
चाहे कितने मधुर सरस हों
ये आनृत भंडार मनोहर
चाहे जितना सुखद हमें हा

यह आवास भले ही साथी !
लेकिन हम न यहाँ रह सकते !
भले बहुत विश्रान्ति-प्रदायक
यह पत्तन हो, और भले हो–
कितना शान्त समन्दर साथी !
यहाँ न लंगर हमें डालना !
चाहे कितना सहज हार्दिक
हमें सुलभ आतिथ्य अरे हो !
हमको इसे ग्रहण करने की
अनुमति है, लेकिन कुछ क्षण को !

(१०)

कितने तुम्हें मिलेंगे साथी !
बड़े एक से एक प्रलोभन !
हम नैया खेते जायेंगे
बिना पंथ के गहन सिन्धु में !
हम जायेंगे वहाँ जहाँ पर
बहती हैं स्वच्छन्द हवायें !
लहरें टकराती कूलों से !
और 'यांकी' सरिता होती
प्रवहमान अति तीव्र वेग से !
पोतों के चलने के कारण !
साथी ! शक्ति, मुक्ति औ" धरती
उपादान नाना प्रकार के !
स्वास्थ्य, अवज्ञा, औ जिज्ञासा
स्वाभिमान, आमोद असीमित
साथी ! इन सब उपकरणों से
इन्हीं तुम्हारे उपकरणों से
ओ चिमगादड़-नयनों वाले
भौतिकवादी पुरोहितो रे !
राह रुद्ध करता थाती शव !
और न अधिक प्रतीक्षा करता

दफ़न किसी के लिए यहाँ पर !
अरे साथियो ! अरे दोस्तो !
सावचेत हो जाओ अब भी
वह जो मेरा सहयात्री है
उसे चाहिए सहज श्रेष्ठतम
रक्त, मांस औ" सहनशीलता !
यहाँ परीक्षा हेतु न आये–
कोई नर या कोई नारी
जब तक ला न सके वह साहस
और स्वास्थ्य सुन्दर मनहारी !
अरे यहाँ पर पैर न रखना !
जो तुम पहले ही से अपना
सर्व श्रेष्ठ यदि खर्च कर चुके !
यहाँ अरे आयें वे केवल
जिनका तन है सुघर सुदृढ़ अति !
यहाँ नहीं अनुमति आने की
रोगी को, मद्यप का अथवा–
रोग-व्याधि–उत्पीड़ित जन को !
मैं औ" मेरा वह सहयात्री
नहीं मनाते तर्क-वितर्कों
उपमाओं या अनुप्रासों से !
हमतो अरे मनाते केवल
विद्यमान खुद होकर साथी !

(११)

सुनो ! तुम्हारे साथ रहूँगा
मैं पूरा ईमानदार हो !
मैं देता हूँ तुम्हें नहीं वे
जीर्ण-शीर्ण-चिकनी सौगातें !
मैं देता हूँ नई-खुरदरी !
ये ही तो वे दिन हैं साथी !

जिनमें तुमको युद्ध होना है।
तुम न करोगे संग्रह उनका
जो महत्तामी जग में दौलत।
कर पाओगे जो कुछ अर्जित
कर पाओगे जो कि हस्तगत
यह सब तुम उदार हाथों से
सहज भाव से बिखरा दोगे।
तुम पहुँचोगे उसी नगर में
जहाँ पहुँचना तुम्हें सदा था
तुम मुश्किल से बस पाओगे
वहाँ स्वयं को तुष्टि योग्य बस
इतने में ही पास पहुँचने का
तुमको यह आह्वान मिलेगा!
कर न सकोगे जिसकी किंचित्
तुम अन्तर्मन से अवहेला!
जो पीछे को रह जायेंगे
वे तुम पर फेंकेंगे साथी
व्यंग भरी मुस्कानें तीखी
औ" उपहास करेंगे जीभर!
स्नेह-चिन्ह जो तुम्हें मिलेंगे
तुम उनका प्रतिकार करोगे!
तीव्र चुम्बनों से वियोग के!
तुम अपने पर तनिक न हावी
होने दोगे उनको, जो निज
हाथ पसारेंगे तुम पर रे!

(१२)

अरे साथियो! नाता जोड़ो
तुम भी उन्हीं संगियों से ही
जो हैं विद्यमान इस पथ पर!
प्रखर पुरुष वे आन-बान के!
वे महानतम हैं महिलायें

उपभोगी प्रशान्त लहरों के
और सिन्धु के तूफानों के!
वे कितने पोतों के चालक!
अनगिन मील भूमि के यात्री!
वासी वे सुदूर देशों के
और निवासी दूर गृहों के!
वे विश्वासी नर-नारी के!
नगरों के दर्शक मतवाले
एकाकी श्रम करने वाले!
घासों के गट्ठर, फूलों के,
सीपी के वे संचय-कर्त्ता!
परिणय-संस्कार में होने-
वाले वे नृत्यों के नर्त्तक!
चुम्बन-कर्त्ता वे दुलहिन के!
मददगार कोमल बच्चों के!
जन्म-प्रदाता वे शिशुओं के!
वे विद्रोह के बड़े सिपाही!
गहन और गह्वर कब्रों के-
निकट खड़े वे रहने वाले!
नीचे शव उतारने वाले!
वे सारी ऋतुओं के भीतर
सतत पर्यटन करने वाले
वर्षों तक! अद्भुत वर्षों तक!
जिनमें से प्रत्येक जनमता
होने वाले विगत वर्ष से!
नाना साथी-संगी लेकर
चलने वाले कितने यात्री!
कितने हैं अबोध बचपन से
आगे कदम मिलाने वाले!
कितने हैं जो अपने यौवन-
से प्रफुल्ल चित चलने वाले!
कितने हो ऐसे मर्दाने

जो हैं दाढ़ी-मूछों वाले !
कितनी ही नाशाद नारियाँ
पूरित जो तारुण्य-तोष से !
हैं उनमें कितने ही ऐसे
वृद्ध पुरुष अथवा महिलायें
जिनका है वार्द्धक्य शान्त अति
भरा हुआ शालीन भाव से !
जो बहता है मुक्त भाव से
निकट मरण की महा मुक्ति के !

(१३)

अरे साथियो ! जो अनन्त है
जो अनादि है, उसके आश्रय-
में जाने को, अथवा दिवस की,
चैन रात्रि का, लय कर दो तुम
महामाया के मुहूर्त में !
जिसमें नहीं देखना कुछ भी
बल्कि पहुँच, गुजर भर जाना !
ऊपर – नीचे कोई तुमको
नहीं देखनी सड़क एक भी
फिर भी जो फैली है खुद ही
और प्रतिक्षा करती लम्बी !
जहां नहीं है कोई प्राणी–
प्रभु का अथवा अन्य किसी का !
फिर भी जाना आगे तुमको !
जहाँ नहीं स्वामित्व किसी का !
फिर भी बन सकते तुम स्वामी !

(१४)

अरे साथियो ! सुन लो तुम यह !
संघर्षों युद्ध के जरिये

लक्ष्य नहीं बदला जा सकता
जो पहले से संज्ञायित था !
गत संघर्ष फले क्या अब तक ?
फलीभूत क्या हुआ बताओ
तुम या यह राष्ट्र तुम्हारा ?
तुम अब अच्छी तरह समझलो
सब चीजों का सार एक यह
हर उपलब्ध सफलता करती
आवश्यक करती भविष्य में
एक और संघर्ष विकटतर !
मेरा है आह्वान युद्ध का !
मैं सक्रिय क्रान्ति का पोषक !
जो मेरे जायेगा संग में
वह सशस्त्र हो पूर्ण रूप से !
जो मेरा हम राही होगा
उसे मिलेगी भूख, गरीबी,
क्रुद्ध शत्रु और वीराने !
अरे साथियो ! सड़क सामने !
बहुत सुरक्षित, मैंने परखा
इन मेरे पैरों ने परखा !
रुको नहीं तुम, आगे आवो !
रहने दो अन लिखा अरे तुम
पड़े मेज पर इस कागज को
और शैल्फ में रहने दो तुम
पुस्तक को बस बिना खुले ही !
रहने दो औजार पड़े हो
अपनी जगह कारखानों में !
रहने दो दौलत, बिना अर्जित
रहने दो स्थिर यह शाला !
करो नहीं किंचित् भी चिन्ता
तुम अध्यापक की पुकार की !
उपदेशक को निज शिष्यों को

देने दो उपदेश, कोर्ट में–
तुम अलापने दो वकील को
कानूनी खटराग पुराना !
और भाष्य करने दो उसका
न्यायाधीशों को बिन छेड़े !
अरे साथियो ! मैं पकड़ाता–
तुमको मेरा हाथ और फिर
देता हूं वह प्रेम, जो कि है
धन–दौलत से भी अति बढ़कर !
पूर्ण रूप से मैं करता हूं
तुमको आज स्वयं को अर्पित !
पर क्या तुम प्रतिकार करोगे ?
क्या हमराही होवोगे मेरे ?
बोलो क्या हम एक–दूसरे–
से आजीवन जुड़े रहेंगे ?

(संक्षिप्त भावानुवाद)

———

I

चमत्कार

क्यों और कौन यह चमत्कार करता है ?
मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं
लेकिन इतना जानता हूं
कि चमत्कार होते हैं !
चाहे मैं मनहट्टन की गलियों में घूमूं
अथवा आकाश की ओर देखते हुए
मकानों की छतों पर दृष्टि-निक्षेप करूं
चाहे समुद्र के किनारे
पानी में नंगे पांव चलूं
या कि वन-प्रान्तर में
घने वृक्षों की छांह तले खड़ा रहूं
अथवा दिन में उससे बतियाऊं
जिसे मैं प्यार करता हूं
या रात को उसके साथ हमबिस्तर होऊं
जिससे मुझे मुहब्बत है !
या आराम के साथ खाने की मेज पर बैठूं
या कार में सामने की ओर बढ़ते हुए
अजनबियों पर दृष्टि डालूं
या किसी गरमी की दोपहरी में
छत्ते के चारों ओर मँडराती हुई
व्यस्त मधु मक्खियों,
खेतों में चरते हुए पशुओं
पक्षियों या हवा में तैरते हुए
भुनगों की आश्चर्यमयता
या सूर्यास्त अथवा शान्त और स्निग्ध-
उगते हुए तारागण की आश्चर्यमयता
अथवा वसन्त में नये चन्द्रमा के मुलायम कटावों-
को निहारूं !
ये सब के सब

जो शेष हैं उनके साथ
मुझे चमत्कार दृष्टिगोचर होते हैं !
समग्र रूप से मिले हुए होकर भी
इनमें से प्रत्येक कितना विशिष्ट
और अपनी माकूल जगह पर है !
मुझे रोशनी और अंधेरे की प्रत्येक घड़ी चमत्कार है !
अन्तरिक्ष का हर घन इंच मुझे चमत्कार है !
पृथ्वी के धरातल का प्रत्येक वर्ग गज
मुझे उसी चमत्कार से ओत-प्रोत लगता है ?
अभ्यन्तर का प्रत्येक कदम
मुझे उसी भावना से सम्पृक्त प्रतीत होता है
मुझे समुद्र एक शाश्वत चमत्कार है !
उसमें तैरती हुई मछलियाँ
चट्टानें
लहरों की चंचलता
जहाज
और उनमें बैठे हुए आदमी
सभी में कितने अद्‌भुत चमत्कार हैं ?

———

अनाम देश

अमरीका के इन राज्यों से
दसों हजार साल पहले
ऐसे राष्ट्र थे
जहाँ युगों पहले
हमारे जैसे ही नर-नारी
पैदा हुए, अपनी राह चले
और विदा हो गये !
कैसे प्रशस्त और सुनिर्मित नगर
कैसे व्यवस्थित गणतन्त्र
कैसी चरवाही जनजातियाँ
और कैसे खानाबदोश !
कैसे इतिहास, शासक, रणबंके
शायद सभी दूसरों से ऊपर निकलते हुए !
कैसे कानून-कायदे
रस्म और रीति-रिवाज
कथन, कला और परम्परायें !
कैसे विवाह, कैसा देव-विश्वास !
कैसा शरीर-शास्त्र और कपाल-विज्ञान
उनकी कैसी आज़ादी और दासता !
वे मृत्यु और आत्मा के बारे में क्या सोचते थे ?
कौन कुशाग्र और बुद्धिमान थे,
कौन सुन्दर और आनन्दमय थे
कौन क्रूर और अविकसित थे
इनका एक भी चिह्न

एक भी लेखा शेष नहीं है
फिर भी जैसे सब कुछ है !
अरे ! मैं जानता हूं,
वे आदमी और औरतें
उससे ज्यादा निरर्थक नहीं थे
जितने कि हम हैं !
वे इस संसार की संरचना-
से उतने ही जुड़े थे।
जितने कि आज हम जुड़े हैं !
वे बहुत दूर खड़े हैं
फिर भी,
मैं उन्हें अपने निकट महसूसता हूं
उनमें से कुछ अंडाकार आकृतियां लिए
धीर और गम्भीर हैं !
कुछ नंगे और जंगली
कुछ कीड़े-मकोड़ों की भीड़ से लगते हैं !
कुछ तम्बुओं में हैं—
चरवाहे, परिवार के मुखिया
कबीले और घुड़सवार !
कुछ वन प्रान्तर में भटकते हुए
कुछ खेतों पर शान्तिपूर्वक रहते हुए
श्रम करते हुए
फसल काटते हुए
और खलिहानों को भरते हुए !
कुछ पक्की इमारतों में चहल कदमी करते हुए
मन्दिरों, महलों, कारखानों,
पुस्तकालयों, प्रदर्शन-गृहों,

न्यायालयों प्रेक्षा-गृहों
और आश्चर्यजनक स्मारकों के बीच !
क्या वे कोटि-कोटि मानव
सचमुच विदा हो गये हैं ?
क्या धरती के पुराने अनुभव से सम्पन्न
वे महिलायें गुजर चुकी हैं ?
क्या उनके जीवन-चरित्र, नगर और कलायें
अब मात्र हमारे पास बचे हैं ?
क्या उन्होंने स्वयं अपने लिए
कोई उपलब्धि हासिल नहीं की ?
मेरा विश्वास है,
वे सभी आदमी और औरतें
जिन्होंने इन अनाम देशों को भरा था
अभी भी यहाँ अथवा कहीं और
हमसे अदृश्य होकर भी मौजूद हैं !
ठीक उसी अनुपात में
जिसमें कि उनमें से प्रत्येक ने
जीवन में विकास पाया
और जितना उन्होंने कर्म किया
अनुभव किया
प्यार अथवा पाप किया !
मेरा विश्वास है,
यह उन समस्त राष्ट्रों
अथवा उनमें से किसी व्यक्ति का
उनकी भाषाओं, सरकारों, शादियों
साहित्य और उत्पादन
खेल-कूद, युद्ध,
तौर-तरीके,

अपराध और जेलें
शूरवीर और शायर
इन सभी का
उससे अधिक अन्त नहीं था,
जितना कि मेरे राष्ट्र का या मेरा होगा।
मैं उनके परिणामों पर सन्देह करता हूं
अभी तक अदेखी दुनियां में
जिज्ञासा के साथ प्रतीक्षा करता हूं
उस सब की,
जो प्रत्यक्ष दुनियां में उन्हें प्राप्त हुई थी !
मुझे आशंका है कि मैं उनसे वहां मिलूंगा
मुझे आशंका है,
उन अनाम देशों की हर पुरानी वस्तु
मुझे वहां मिलेगी !

— — —

मुझे शान्त ओजस्वी सूरज दो तुम ऐसा !

मुझे शान्त ओजस्वी सूरज
दो तुम ऐसा जिसकी किरणें
पूर्णरूप से ज्योतिर्मय हो !
मुझको दो उपवन से लाकर
हेमन्ती रस भरा मधुर फल !
दो मुझको वे खेत जहाँ पर
मुस्काती हो दूब, न जिसका
किया परस हो चल हँसिये ने !
मुझको दो अंगूर उमगते
रस छल-छल करता हो जिनसे !
मझको दो गेहूं की वाली
जिसको भरती नवें माह की
मधुमक्खी अपनी गुन-गुन से।
दो मुझको तुम शान्तभाव से
विचरण करते वे पशु अनगिन
जो सन्तोष सिखाते मुझको !
मुझे स्तब्ध दो ऐसी रजनी
जैसी होती दूर मिसिसिपी
सरिता के पश्चिम पर पड़ने
वाले ऊँचे उस पठार पर !
जिसमें मैं एकाकी निस्वन
तारों को अपलक निहार लूँ !
मुझको दो उद्यान सुगन्धी
सूर्योदय के समय खिले हों
जिसमें सुन्दर फूल सुहाने।
घूम सकूँ निर्विघ्न जहाँ में
एकाकी स्वच्छन्द भाव से !
परिणय के हित मुझे एक दो

सुरभित श्वासों वाली बाला
जिससे नहीं श्रघाऊँ पल भर
कभी श्रजाने भी जीवन में!
मुझे एक दो सुन्दर सा शिशु
सुघड़ सलोना श्रौर सुहाना
दूर जगत के कोलाहल से
मुझको दो ग्रामीण, शान्तिमय
एक गृहस्थी का मृदु जीवन!

गद्य-खण्ड

सुरभित श्वासों वाली बाला
जिससे नहीं अघाऊँ पल भर
कभी अजाने भी जीवन में!
मुझे एक दो सुन्दर सा शिशु
सुघड़ सलोना और सुहाना
दूर जगत के कोलाहल से
मुझको दो ग्रामीण, शान्तिमय
एक गृहस्थी का मृदु जीवन!

गद्य-खण्ड

[वाल्ट ह्विटमैन की समूची जीवन यात्रा संघर्षों की एक लम्बी कहानी है। जीवन भर वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर अस्थिरता की स्थिति में भटकते रहे। प्रेस कम्पोजीटर से लेकर क्लर्क और अध्यापक से लेकर संपादक तक के अनेकानेक कार्य उन्होंने अपनी आजीविका के लिए किये, किन्तु उन्होंने अपने कवि को क्षण भर के लिये भी नहीं मरने दिया। उनकी सहज संवेदनशीलता और मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय उनके काव्य में ही नहीं उनके गद्य में भी प्रचुर परिमाण में प्राप्त होता है। ह्विटमैन का गद्य मुख्यतः तीन रूपों में उपलब्ध है—उनके द्वारा अपने परिजनों और मित्रों को लिखे गये पत्रों में, जिन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उन्होंने सम्पादन किया, उनके सपादकीय लेखों में और उनकी निजी डायरी के पृष्ठों में। यहाँ उनके कुछ ऐसे पत्र तथा डायरी के अंश उद्धृत किये जा रहे हैं, जो उनके व्यक्तित्व के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को प्रतिबिम्बित करते हैं।]

(एक अपरिचित पत्र लेखक के नाम)

ब्रुकलीन
शनिवार, तीसरे पहर,
२० जुलाई, १८५२।

प्रिय बन्धु,

चूंकि मुझे आपको पत्र देने में विलम्ब हो गया है, इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं आपका भूल गया हूं। नहीं ऐसा कभी नहीं होगा। मैं आपकी यात्राओं के बारे में अक्सर याद करता हूं और आपकी अच्छाइयों का बार-बार स्मरण करता हूं। मैं अपने मित्रों के बारे मे बहुत गहराई से चिन्ता करता रहा हूं, यद्यपि उन्हें मैं पोस्ट आफिस के द्वारा पत्र नही लिख सकता। एक प्रकार से अपनी कविताओं के माध्यम से ही मुझे उन्हे लिखकर सन्तोष होता है।

हैक्टर को आप यह कहदें कि मैं उसके निमंत्रण और पत्र के लिए हार्दिक रूप से आभारी हू। यह मैंने जान बूझ कर नहीं किया है कि मैं उसे उत्तर नहीं दूँ या उसके मैत्री पूर्ण निमंत्रण को स्वीकार नहीं करूं। मैं एक तरह से बड़ा अविनीत हूं। इस प्रकार के शिष्टाचार और औपचारिकताओं को निभाने के लिए बड़ा गैर जिम्मेवार आदमी हूं। सचमुच मैं इस मामले मे बहुत बुरा हूं।

मैने एक शाम श्रीमती प्राइस और श्री आरनोल्ड के साथ बिताई थी। श्रीमती प्राइस और हैलन अपनी सिलाई मशीन के साथ श्री बीचर या श्री हैनरी बार्ड अथवा उसके पिता के यहां गई हुई थी। उन्होंने दिन भर काफी काम किया था। आपने ब्रुकलीन छोड़ा उसके बाद श्रीमती वाल्टन से एक बार मिला हूं और उनके साथ खाना भी खा चुका हूं। कुछ कारणों से मैं उनके साथ सहानुभूति रखता हूं। निश्चित रूप से वह जीवन मे मूर्खा नही हैं।

फाउलर और वेल्स मेरे लिए बहुत बुरे आदमी हैं। वे मेरी पुस्तक की बड़ी आलोचना करते है। मैं अपनी पुस्तक का तीसरा संस्करण निकालना चाहता हूं। १०० कविताऐं इस समय तैयार हैं। पिछले सस्करण में केवल ३२ कविताऐं थी। मैं कोई ऐसा प्रकाशक तैयार करूंगा जो फाउलर और वेल्स से प्लेटें खरीद सके और आवश्यक संशोधन और परिवर्द्धन के बाद तीसरा संस्करण निकाल सकें। फाउलर और वेल्स वे प्लेट्स देने के लिए राजी हैं। अगले संस्करण में जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं १०० कविताऐं होंगी, इसके अतिरिक्त उसमें और कोई सामग्री नहीं होगी। न उसमें

एमर्सन और मेरे बीच हुए पत्र व्यवहार को प्रकाशित किया जायेगा और न अन्य कोई सूचनाऐं ही होंगी। मेरी समझ मे वह सही मायने में "लीव्ज आफ ग्रास" होगी।

प्रिय मित्र ! मैं कोई दिन निश्चित नहीं कर सकता जब कि मैं आपसे भेंट करने आऊं जैसा कि मैंने आपको वचन दिया है। जाने मुझे क्या हो गया है कि मैं इस प्रकार की भेंटें उन लोगो से करने मे भी कतराता हूं जिनके साथ रहने में मुझे प्रसन्नता होती है। माताजी अच्छी तरह हैं, हम सब अच्छी तरह है। मां से आपके बारे में चर्चा करता रहता हूं। हम सब आपको उससे भी अधिक स्मरण करते रहेगें जितना कि आपको अनुमान है। फिलाडेलफिया आने से पहले मैं आपको या हैक्टर को सूचित कर दूंगा।

शांति एवम् मित्रता की कामना करते हुए,

आपका
वाल्ट ह्विटमैन

(विलियम डी ओ कोरनोर के नाम)

ब्रुकलीन,
६ जनवरी, १८६५

प्रिय मित्र,

तुम्हारा ३० दिसम्बर का पत्र मुझे सुरक्षित मिल गया। मैंने मिस्टर ओर हो को अपना प्रार्थना पत्र भेज दिया है और मिस्टर आस्टन को भी कुछ पंक्तियाँ लिख दी हैं, साथ ही प्रार्थना पत्र की एक कापी संलग्न कर दी है। मैं नियुक्ति पाने के लिए लालायित हूँ। बाकी जैसा कि तुमने उल्लेख किया है मैं सैनिकों की सेवा और अपनी कविताओं में उसी प्रकार तल्लीन हूँ। सम्भवतया "ड्रमटैप्स" का प्रकाशन इस शीत ऋतु में हो जायेगा। प्रकाशन उसी प्रकार होगा जैसा कि मैंने तुम्हें पहले उल्लेख किया है। पाण्डुलिपि प्रेस में भेजने के लिए पूर्णरूप से तैयार है। मेरे विचार से यह पुस्तक "लीव्ज आफ ग्रास" से कला की दृष्टि से निश्चित रूप से अधिक सुन्दर होगी क्योंकि इसका संकलन मैंने बहुत ही सावधानिक ढंग से किया है। सामान्य पाठकों को यह भले ही आनन्द न दे परन्तु सच्चे कलाकार को इसमें अवश्य रस मिलेगा। "ड्रमटैप्स" से सम्भवतया मैं इसलिए अधिक सन्तुष्ट हूँ क्योंकि जिस कार्य को करने की मेरी कामना रही है वह इससे पूरा होता है। मेरे विचार कविता में काल और भूमि के समस्त क्रिया कलापों की विस्तृत अभिव्यक्ति देते रहे हैं। यह अभिव्यक्ति मैंने इस कविता में दी है। जैसा कि मैंने कहा है "लीव्ज आफ ग्रास" से मैं "ड्रम टैप्स" को सुन्दर समझता हूं इसलिए कि कला की दृष्टि से वह महत्वपूर्ण है और उसकी विषय वस्तु बड़ी सामान्य है और इसलिए भी कि इसमें अनावश्यक कुछ भी नहीं है। मुझे मेरी कविता तब आनन्ददायक अनुभव होती है जब मेरे सामने यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें जो कुछ कहा गया है उसका एक शब्द भी अनावश्यक और निरर्थक नहीं है बल्कि सब कुछ आवश्यक और अच्छा है। फिर भी "लीव्ज आफ ग्रास" मुझे अपनी प्रथम कृति के रूप में हमेशा प्रिय रहेगी क्योंकि वह मेरे जीवन की प्रथम आशाओं, सन्देहों, प्रयत्नों और कामनाओं की द्योतक है। यहां मैं सरकारी व अन्य लोग प्रसन्न हैं। पिछले ३ महीने से घर की कोई चिट्ठी नहीं आई है। लगता है कि अनिष्ट की आशंकायें हैं। मैं हमेशा से कभी कभी बिखरा रहता हूँ। मैं अच्छी तरह हूँ फिर भी अब इस स्थान को छोड़ना चाहता हूँ। अगर मित्र ह्यूगो से तुम्हारी मुलाकात हो तो उससे कहना कि मुझे [illegible] याद है और [illegible] से हो गया है। यह [illegible]

समय उसीकी बात करता रहा। मुलेरी मरने से बच गया है और अब वह स्वस्थ है और सशक्त हो जायेगा। उसका पता है :

वार्ड नम्बर ७,
सेन्टर सैन्ट हॉस्पीटल,
न्यूयार्क, न्यूजर्सी।

मैं पिछली रात श्रीमती प्राइस के यहां गया था। इन सर्दियों में उनकी हालत अच्छी है। श्रीमती पौलना राइट डेविस उनके साथ ठहरी है। मैंने डाक्टर विलियम एफ चैनिन को अपनी अस्पताल यात्राओं के शब्द चित्रों के साथ एक पत्र भेजा है। चिट्ठी लिखकर अस्पतालों में उन्होंने जो मुझे सहायता दी है उसे स्वीकार नहीं करने के लिए मैं अपने आप को क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे पत्र में ही यह उल्लेख कर दूं कि चार्ल्स एलड्रिज बोस्टन नहीं गया है।

तुम्हारा
"वाल्ट व्हिटमैन"

एटॉर्नी जनरल कार्यालय,
वाशिंगटन,
१८ मई, १८६६

प्रिय भाई जैफ,

माँ के पत्र से मुझे मकान बदलने के बारे में सूचना मिली है। माँ का कहना है कि वे प्रसन्न हैं और नया मकान किसी भी तरह से बुरा नहीं है। मैं इस पत्र के साथ एक लिफाफा रख रहा हूँ जिसमें माँ के लिए कुछ रुपये हैं। जैसा कि तुम्हें ज्ञात है, मैं उसी जगह हूं। मेरे पास अच्छा स्थान है और काफी समय है। मेरे एटोर्नीजनरल इस समय केन्टकी गये हुए हैं। काम का भार भी ज्यादा नहीं है, लेकिन मैं कह नहीं सकता कि मैं यहां काम करता रहूंगा या नहीं। फिलहाल परिवर्तन की कोई सम्भावना नहीं है। इस बसंत ऋतु में मैं काफी सुख का अनुभव करता हूं लेकिन एक क्लर्क का जीवन यहां कोई बहुत दिलचस्प नहीं है। मैं पिछले बृहस्पतिवार को पोटोमस से १६ मील आगे माउण्ट वेर्नोन गया था। मेरे ख्याल से मैंने अब तक इससे अधिक सुन्दर स्थान और फार्म नहीं देखा। कल यहां एक आदमी का अन्तिम संस्कार था। तुमने बूढ़े काउन्ट गुरोवस्की के बारे में पत्रों में पढ़ा होगा। मैं इस व्यक्ति से जब से वह यहां रहा है, तब से परिचित हूं। वह वृद्ध आदमी अपने देश पोलैण्ड में एक बड़ा जागीरदार था। उसके पास ३०,००० सर्फ जमीन और काफी जायदाद थी, किन्तु उसे अपने यहां के शासन के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के आरोप में निष्कासित कर दिया गया था। वह हर एक बात के बारे में जानकारी रखता था और अक्सर दूसरों का छिद्रान्वेषण करता रहता था। किन्तु मेरे साथ वह बड़ा शिष्ट था। उसने अपनी पुस्तक "मेरी डायरी" में जिसका प्रकाशन गई गर्मियों में किया है, मेरे बारे में बड़ी ऊंची राय जाहिर की है। उसका अन्तिम संस्कार बड़े साधारण ढंग से हुआ, पर साथ ही बड़ा प्रभावोत्पादक। लगभग सभी बड़े लोग उसमें थे।

कांग्रेस और राष्ट्रपति के बीच अभी भी संघर्ष जारी है। मेरे ख्याल से राष्ट्रपति कांग्रेस के बहुत विरोध में जाने से डरते हैं, क्योंकि स्टीवेंस और शेष लोग बहुत कृत संकल्प हैं। मेरे अस्पतालों में अब बहुत थोड़े सैनिक रह गये हैं, लेकिन हर सप्ताह कुछ दिनों की सेवा सुश्रूषा के लिए अभी भी काफी रोगी हैं। मैं रविवार को हमेशा जाता हूं। कभी कभी सप्ताह के मध्य में भी जाता हूं। जूलियस मैसन अभी भी वहीं बैरक्स में है! फिर भी जैफ। मेरी इच्छा होती है कि मैं घर आ जाऊँ

मिस्टर लेन और डाक्टर को मेरा नमस्कार कहना, तथा मैट की छोटी बच्चियों को प्यार ! मुझे घर के मामलों के बारे में पूरी जानकारी भेजना । जार्ज का कैसा चल रहा है। मेरी लाड़ली माँ जैसे-जैसे बूढ़ी होती जाती है, उसके बारे में मेरी चिन्ता रात दिन बढ़ती जाती है ।

तुम्हारा
"वाल्ट"

(विलियम माईकल रोजेटी के नाम)

वाशिंगटन,
नवम्बर २२, १८६७

प्रिय मित्र,

मेरा अनुमान है कि कौनवे के नाम लिखा हुआ पत्र मिल गया है और उसे तुमने भी पढ़ा होगा। यह पत्र मैंने लगभग तीन सप्ताह पूर्व भेजा था, जिसमें मैंने मेरी जो कविताओं की पुस्तक पुर्नमुद्रण के लिए तैयार कर रहे हो, उसमें कतिपय शब्दों को बदलने की स्वीकृति दे दी है। मेरा ख्याल है, इस पुर्नमुद्रण का उद्देश्य मेरी कविताओं का कोई कटा-छटा संस्करण प्रकाशित करने का नहीं होगा। मैं आशा करता हूँ कि इसमें केवल मेरे विभिन्न संस्करणों से चुनी हुई कविताएं होंगी। इस दृष्टि से यह बेहतर होगा कि तुम उसका नाम "वाल्ट व्हिटमैन पोइम्स सेलेक्टेड फोम दी अमेरिकन एडीशन्स बाई विलियम एम रोजेटी" रखो। जब मैं अपनी पुस्तक का यहां दूसरा संस्करण प्रकाशित करूंगा "लिलेक्स इन दी डोर यार्ड ब्लूम्ड' शीर्षक कविता का नाम बदलकर "प्रेसीडेन्ट लिंकन्स फिनरल होम" रख दूंगा। तो तुम अपनी इच्छानुसार कोई नाम रख सकते हो। मैं यह विशेष रूप से चाहूंगा कि छन्दों की क्रम संख्या मोटे अक्षरों में इस प्रकार दिखाई जाये कि अलग-अलग छन्द स्पष्ट रूप से दिखाई पड़े। यह निश्चित है कि मैं अपने दूसरे संस्करण में मृत्यु और अमरता पर किये गये मेरे चिन्तन से उद्भूत कुछ कविताओं को और जोड़ूंगा। मैं तुम्हें लोकतन्त्र पर लिखा गया मेरा प्रकाशित लेख भी भेज रहा हूँ। यह जल्दी में लिखा हुआ अवश्य है, किन्तु यह उन पाठकों के लिए अवश्य मार्ग दर्शन देगा जो "लीव्ज आफ ग्रास" में अभिरुचि रखते हैं और जिनके लिये मैंने यह पुस्तक लिखी है। मैं तुम्हें मिस्टर बरउज के नोट्स और कुछ पत्रों की प्रतिलिपियां भी भेज रहा हूँ।

प्रिय बन्धु ! तुम जैसा भी चाहो, निरपेक्ष भाव से इन वस्तुओं को जो मैं तुम्हें भेज रहा हूँ, समयानुकूल उपयोग कर सकते हो अथवा नहीं भी कर सकते हो। यह भी संभव है कि मेरे द्वारा दिया गया सुझाव तुम्हारे मस्तिष्क में पहले ही से आ गया होगा।

तुम्हारा
"वाल्ट व्हिटमैन"

(अपनी माता लुईसा व्हिटमैन के नाम)

न्याय विभाग,
सोमवार दोपहर,
१ जनवरी, १८७२

प्यारी मम्मा,

नया साल शुरू हो गया है, लेकिन बड़ी विचित्र बात है कि कोहरा ऐसा घना छाया हुआ है जैसा कि मिश्र में। कभी-कभी तो आंखों के आगे छड़ी भी नहीं देखी जा सकती। दो दिन से बड़ा कीचड़ हो रहा है और झिरमिर झिरमिर बारिश हो रही है। मैं यहां स्वस्थ और सुखी हूं। मुझे अभी-अभी सूचना मिली है कि मेरा स्थानान्तर ट्रेजरी बिल्डिंग मे, ट्रेजरार के सालीसिटर के कार्यालय में होने को है। मेरे नये अधिकारी मिस्टर विलियम्स अपने किसी मित्र को यहां लाना चाहते हैं। मैं नहीं समझता कि यह परिवर्तन मुझे पसन्द नहीं आयेगा। मैं इसके बारे में एक सप्ताह में ठीक प्रकार से कह सकता हूँ। मैंने १ जनवरी से लम्बी छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र दे दिया है, मुझे उम्मीद है, छुट्टी स्वीकृत हो जावेगी, लेकिन बिना तनख्वा। मैं कुछ दिनों के लिए घर आना चाहता हूं, घरेलू वातावरण मे रहने की दृष्टि से भी और अपनी पुस्तकों के नये संस्करण की देख-रेख करने के लिए भी। इन सर्दियों मे मैं बड़ा स्वस्थ और मोटा हो गया हूं, लेकिन मेरा ख्याल है कि एक न एक परेशानी खड़ी होती ही रहती है और मैं कुछ महीनों के लिए परिवर्तन चाहता हूं। प्यारी मां! तुम्हारा पिछला सप्ताह कैसा कटा इसके बारे मे भी मैं जानना चाहता हू, और जार्ज और लाऊ¹। मैंने पिछले सप्ताह तुम्हें ३ चिट्ठियां और पत्र भेजे थे। मुझे मालूम हुआ है कि पुलिसमैन डोयले जिसकी मृत्यु गोली लगने से हुई थी, वह पीटर डोयले का भाई था। मैं कल उसकी अन्त्येष्टि क्रिया में भाग लेने गया था। मैंने जो समाचार-पत्र तुम्हें भेजे हैं, उनमे यह लिखा है।

ढेर सारे प्यार के साथ!

तुम्हारा
"वाल्ट"

¹ छोटे भाई।

(अपने मित्र पीटर डोयले के नाम)

अगस्त ६, १८६८

प्रिय पीटे,

मेरे बारे में विशेष लिखने की बात नहीं है। समय बड़ी तेजी से गुजरता जा रहा है। वाशिंगटन छोड़ने की बात १-२ दिन पहले की सी लगती है, किन्तु मेरे प्रवास को आज चार सप्ताह हो गये हैं। पिछली रात न्यूयार्क में विशाल लोकतान्त्रिक सभा और मशालों के जुलूस का अनुपम राजनैतिक दृश्य मैंने देखा। मैं उन दृश्यों का आनन्द लेने के लिए सब के बीच में था। मुझे शहर की यह भीड़-भाड़ और उन्मुक्तता जैसी कि पिछली रात अपनी पूर्णता पर थी, अच्छी लगती है। मैं तुम्हें कह नहीं सकता कि लोकतन्त्र के समर्थक किस प्रकार हजारों की संख्या में इकट्ठे हुए थे। सारा शहर मशालों की रोशनी से जगमगा रहा था। नगर के विभिन्न भागों में रात को तोपें छोड़ी गई। जब मैं रात को १२ और १ बजे दूसरी ऐवेन्यू को जाने वाली एक कार मे आ रहा था, हमें लौटते हुए जुलूस के कारण रास्ते में रुक जाना पड़ा। मैंने इसके सामने खड़े होकर इसका प्रचुर आनन्द लिया। हमारे सामने होते हुए वह लगभग १ घंटे में गुजरा। जुलूस मे सब प्रकार की वस्तुएं थीं, ४० या ५० फुट लम्बे जहाजों के मॉडल पूर्ण रूप से सुसज्जित। महिलाएं कार्स आफ लिबर्टी मे बैठी हुई थीं। हर आदमी के हाथ में जलती हुई मशालें थीं। हर दिशा में आतिशबाजियों का नजारा था। आकाश राकेट्स से छोड़े हुए बड़े-बड़े गुब्बारों से भरा हुआ था और तारों के बीच मे रोमन कैन्डल्स दिखाई पड़ रही थी। वह उत्तेजना, वह भीड़ और वे अनन्त मशालें, उन सब ने मुझे बड़ा आनन्द दिया। पास और दूर पर छूटने वाली तोपों की आवाज मैं बिस्तर पर पड़ने के बाद देर तक सुनता रहा। मैं तुम्हें 'हेराल्ड' की एक प्रति भेज रहा हूं, जिसमें इस दृश्य का विवरण छपा है, लेकिन इसमे इसके साथ आधा भी न्याय नहीं हुआ है। भाषण किसी काम के नहीं थे। मेरा अनुमान है कि तुम्हें मेरा ३ अक्तूबर शनिवार का भेजा हुआ पत्र और पेपर मिल गया होगा। मुझे तुम्हारा पहली अक्तूबर का पत्र और 'स्टार' की प्रति मिल गई थी। मैंने मिस्टर नौम के पश्चिमी पत्रों को बड़े आनन्द के साथ पढ़ा। तुम्हें बार बार के अपने नये कार्यालय में बहुत कुछ नया देखने को मिल रहा

होगा। यहां का आर आर कार्य-संचालन दूसरे प्रकार का है। यह लोग इन लम्बे रास्तो से इतनी तेजी से गुजरते हैं कि मवेशियों के प्रति भी इनका कोई दया भाव नहीं रहता। तीसरी ऐवेन्यू आर आर ने इन्हीं गर्मियों मे एक दिन, जो सबसे गर्म दिन था, ३६ घोड़े गंवा दिये। भारतीय ग्रीष्म ऋतु की भांति आजकल यहां मौसम बड़ा मन भावन हो रहा है।

तुम्हारा प्रिय साथी
"वाल्ट"

(अपनी माता श्रीमती लुईसा ह्विटमैन के नाम)

वाशिंगटन
१० जून, १८६३

प्रिय अम्मा,

आपका पत्र मैंने हेग के द्वारा जार्ज को भिजवा दिया है, वह उसे मिलेगा या नहीं, इसके बारे में मैं कुछ कह नहीं सकता। जार्ज का मुझे, अभी कोई उत्तर नहीं मिला। मां! मेरे गले में पिछले कई दिनों से खराबी हो गई है, और मेरे सिर में भी पिछली रात तक तकलीफ थी, लेकिन अब मैं फिर ठीक हो गया हूं। रोजाना की तरह मैं शहर में इधर-उधर अस्पतालों की तरफ हो आता हूं। मुझे यह कहा जा रहा है कि मैं अस्पताल में रोगियों के इर्द-गिर्द मंडराता फिरता हूं, जिसमें कितने ही मरीज बुखार से पीड़ित है और घायल हैं। एक सिपाही जो यहां ११ दिन पहले ही लाया गया है, थोड़ा टाइफाइड से पीड़ित था और घायल है। उसका नाम लिविंगस्टन ब्रूक्स है। मैंने उसे लगभग मृत अवस्था में पाया था इसीलिए मैं उसके प्रति विशेष रूप से तल्लीन हो गया हूं। उसकी यह हालत देख-भाल के अभाव और खराब सड़क पर तेज रफ्तार से ४० मील मोटर चलाने के कारण हुई है। वह एक गांव का साधारण लड़का है, बड़ा संकोची और चुपचाप रहने वाला। उन लोगों ने उसकी अवहेलना की तो, उसने कोई शिकायत नहीं की। मैंने ठीक उसे वैसा ही पाया जैसे पिछली सदियों में जान होम्स् को। मैंने उसकी और डाक्टरों का ध्यान आकर्षित किया, नर्सों पर डांट पड़वाई, उसके सिर पर बर्फ के टुकड़े रखवाये, क्योंकि उसके सिर में असहनीय पीड़ा थी। उसका सिर आग की तरह जल रहा था। वह बड़ा शांत और समझदार लड़का था, पुराने ढंग का। वह मरना नहीं चाहता था। मुझे उसी के पास लेटना पड़ा, क्योंकि उसकी धारणा यह थी कि मैं सब कुछ जानता हूं और मैंने उसे यह भरोसा दिलाने का प्रयत्न किया कि जो कुछ मैं कहता हूं सत्य है और कुछ खतरे की बात हुई तो मैं उसे साफ-साफ कह दूंगा, छिपाऊंगा नहीं। अस्पताल का नियम यह है कि असाधारण ज्वर के रोगी को मुख्य वार्ड से बाहर टैन्टों में ले जाया जाता है। डाक्टर ने मुझे बताया कि उसे भी यहां से हटाना होगा। मैंने धीरे से उसे यह बात बतलाई लेकिन वह बेचारा लड़का यह समझा कि यह उसकी मृत्यु की निशानी थी और इसीलिये उसे वहां से हटाया जा रहा है। इससे उस पर बड़ा दुष्प्रभाव हुआ। यद्यपि मैंने उससे सच्ची कही थी, फिर भी इसका उस पर कोई असर नहीं हुआ। मैंने डाक्टर को किसी प्रकार उसे वहीं रहने देने पर राजी कर लिया। वह तीन दिन तक वहां पड़ा रहा। तो मां! अब इस

लम्बी दास्तान को दो शब्दों में इस तरह खतम करूंगा कि अब वह खतरे से खाली है, अब वह थोड़ा बहुत खाना भी खा लेता है। पिछले एक सप्ताह तक तो उसने दूध भी खाया नहीं था, और मुझे उसे यदा कदा एक चौथाई सन्तरा खाने के लिए विवश करना पड़ता था। मैं कहता हूं, चाहे कोई इसे मेरा अभिमान बताए, लेकिन् वह अच्छा हो गया तो कहूँगा कि मेरे ही कारण उसकी जान बची है। मां! जैसा मैंने तुम्हें पिछले पत्रों में लिखा है, तुम्हे यह कल्पना नहीं हो सकती कि किस प्रकार यहाँ बीमार और मरते हुए नवजवान अपने हाथों मे चिपट जाते हैं और सचमुच अस्पताल के उदासीन, निराशा भरे और मृत्यु के वातावरण में रहना भी कितना आकर्षक है। इसी आरमरी स्क्वायर के अस्पताल मे जहां यह लड़का है, मैं ऐसे ही लगभग १५-२० मरीजों को और देखता हूं। पूर्वी ब्रुकलीन से भी दो लड़के हैं–एक जार्ज माउक और दूसरा स्टीफेन रेडगेट। स्टीफेन रेडगेट की मा विधवा है, जिसे मैंने पत्र भी लिखा है। यह दोनों लड़के बुरी तरह घायल हुए हैं। इनकी उम्र अभी १६ वर्ष से भी कम है। मां! इन मरीजों की चारपाईयों से गुजरते हुए मुझे ऐसा लगता है कि छोटे लड़कों को यह कटु अनुभव देना कितना बुरा है। मैं अपना अधिकाधिक समय आरमरी स्क्वायर अस्पताल मे ही देता हूं, क्योंकि इसी में सबसे अधिक घायल और ऐसे लोग हैं जिन्हें धैर्य की आवश्यकता है। मैं यहा प्रतिदिन बिना नागा आता हूं और अक्सर रात मे भी आता हूँ और वहां देर तक ठहरता हूँ। मुझे कोई दखल नहीं देता, चौकीदार, नर्स, डाक्टर, कोई भी नहीं। मैं अपनी मर्जी के अनुसार काम करता हूं।

तुम्हारा,
"वाल्ट"

(श्रीमती ऐनी गिलक्राइस्ट के नाम)

कैमडेन, न्यूजर्सी,
१७ अगस्त, १८७३

मेरी प्रिय मित्र,

मुझे तुम्हें किसी भी तरह अब तक कई बार पत्र लिखने चाहिये थे, किन्तु तुम्हें अपना पिछला पत्र लिखने के बाद मेरे जीवन पर विपदाओं की घटाएँ छाई रहीं और आज भी वे छाई हुई हैं। पिछली २३ जनवरी की रात को मेरे बाएं हिस्से पर लकवे का आक्रमण हो गया और उससे अभी भी पीड़ित हूं। १९ फरवरी को मेरी एक प्रिय बहिन का देहान्त सैन्ट लुईस में हो गया। वह अपने पीछे दो जवान लड़कियों को छोड़ गई है और २३ मई को मेरी लाडली मा का देहान्त भी कैमडेन में हो गया। मैं किसी प्रकार फ्रोमिंगटन से उसकी मृत्यु शैया तक पहुँच गया था। मेरा ख्याल था कि मैं इस आघात को बड़ी दृढ़ता के साथ सहन कर रहा हूं किन्तु मैं कभी अनुभव करता हूँ कि मेरे स्वास्थ सुधार की दिशा में इससे एक बड़ी रुकावट पैदा हो गई है। डाक्टर का कहना है कि मुझे असाधारण शारीरिक कमजोरी है और उसी का परिणाम यह लकवे की बीमारी है। मैं अभी भी कमजोर हूं, चल फिर नहीं सकता और सिर में बड़ी पीड़ा के दौर आते रहते है किन्तु कुछ सुधार भी हुआ है। मैं अब हर रोज कपड़े बदल लेता हू, सो सकता हूं और औसतन ढग से खा भी सकता हूं। हालांकि मेरे शारीरिक आकार प्रकार में कोई अन्तर नहीं हुआ है केवल अधिक वृद्ध नजर आने लगा हू। यद्यपि मैं थोड़ी दूर धीरे-धीरे हिलता डोलता हूं, मुझे चलने में बड़ी कठिनाई होती है और मुझे घर में ही या उसके निकट मे ही सीमित रहना पड़ता है। इस बात की बड़ी सम्भावनाएं है कि मैं स्वस्थ हो जाऊं।

पिछले वर्ष में, विशेष रूप से पिछले ६ महीनों में, मैं तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के बारे में अक्सर सोचता रहा हूँ। कई बार मैंने लिखने का विचार किया लेकिन कुछ लिख नहीं सका। मैं उन पत्रों को जो तुम पिछले वर्ष लिखती रही पढ़ता रहता हूं। मेरे बारे मे तुम्हे यह ख्याल नही करना चाहिए कि किसी नाराजगी के कारण मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखे है। खास तौर पर पिछले ७ महीनों की तुम मेरी मानसिक परिस्थितियों और अन्तर्मन की दशा की कल्पना कर सकती हो तो निश्चित रूप से तुम्हें यह उतना बुरा नहीं लगेगा। मैं इस समय अस्थाई रूप से फिलाडेलफिया के सामने डेलावेयर नदी पर कैमडेन में रह रहा हूं जहां मेरे भाई का मकान है। मैं उन्ही कमरों में रह रहा हूं जहां मेरी माता रहती थी। उनका फर्नीचर और अन्य सभी वस्तुएं सुरक्षित हैं। इन सब वस्तुओं के पीछे एक बड़ा

(जौन एडिंग्टन साईमन के नाम)

कैमडेन, न्यूजर्सी,
१९ अगस्त, १८९०

कैलेम्स के बारे में जो प्रश्न उन्होंने पूछे हैं वे मेरे मस्तिष्क में भी उठते हैं। "लीव्ज आफ ग्रास" को सही रूप में अपने वातावरण और विशिष्ट घड़ी व सीमाओं में समझा जा सकता है जो इसके सभी पृष्ठों और कविताओं में व्याप्त है-जिस प्रकार की बात का उल्लेख आपने किया है, वह कैलेम्स में झलकता है, यह सोचना भी बड़ा भयावह है। उसके पृष्ठों में इस प्रकार की अकल्पित और अवांछित विकृतियों का अनुमान करते हुए भी मैं कांप उठता हूं।

मेरा जीवन, विशेष रूप से मेरी यौवनावस्था और अधेड़पन शारीरिक रूप में बड़े आनन्ददायी रहे हैं और निश्चित रूप से मेरे जीवन का यह पक्ष आलोचना का पात्र है। अविवाहित रहते हुए भी मेरे ६ बच्चे हैं, जिनमें से दो मर चुके हैं। एक लड़का बहुत दूर रहता है। वह सचमुच में भला और अच्छा लड़का है। यदा कदा मुझे पत्र भी लिखता रहता है। प्रतिकूल परिस्थितियों ने मुझे उन घनिष्ट सम्बन्धों का निर्वाह करने से वंचित कर रखा है।

चार कवियों को मेरी श्रद्धांजलि

मैंने लोंग फैलो से एक संक्षिप्त किन्तु आनन्ददायक भेंट की। मैं मिलने जुलने वाले व्यक्तियों में नहीं हूं परन्तु क्योंकि ऐवन्जी लाइन के लेखक ने ३ वर्ष पूर्व जब मैं कैमडेन में बीमार था, मुझसे मुलाकात करने की कृपा की थी, इसलिए मैंने उनसे मिलना न केवल आनन्द का विषय माना अपितु यह एक मेरा कर्तव्य भी था। बोस्टन में वही एक विशिष्ट व्यक्ति थे जिनसे मैं मिला और मैं उनके ओजस्वी मुख, तेजस्विता और शिष्टाचार जो कि पुराने लोगों की विशेषता है, शीघ्र ही नहीं भुला पाऊंगा और यहां प्रसंगवश मैं उन चार कवियों के बारे में उल्लेख करना चाहूंगा जिन्होंने अमरीकी शताब्दी को अपने काव्य साहित्य से प्रभावित किया है। पिछले दिनों एक पुस्तक में मेरे समीक्षकों ने जिन्हें मेरे बारे में कुछ अच्छी तरह जानकारी होनी चाहिए थी मेरे बारे में यह कहा था कि मैं अपने युग के कवियों के प्रति घृणा और सहिष्णुता की भावना से देखता हूँ और उन्हें निरर्थक समझता हूं। लेकिन अगर किसी ने यह जानने का कष्ट किया होता कि मैं उनके बारे में क्या सोचता हूं तो मैं कहूंगा कि एमर्सन, लोंग फैलो, ब्राउन्ट और ह्विटियर को मैं महान काव्य परम्परा के सूत्रधारों के रूप में समादित करता हूं। मेरी दृष्टि से एमर्सन इन सब में शीर्षस्थ है। शेष के बारे में मैं यह सोचने में असमर्थ हूं कि कौन किस से विशिष्ट है क्योंकि उनमें से प्रत्येक विशिष्ट और अनुपम है। एमर्सन अपनी मधुरता, लयात्मकता और दर्शन के लिए मुझे प्रिय हैं। उनके काव्य मधुमक्खी के शहद की भांति मधुर है। लोंग फैलो अपनी सुरंगता और उन सब गुणों के लिए मुझे प्रिय है जो जीवन को सुन्दर बनाते हैं। उनका प्रेम यूरोप के अन्य गायकों से अधिक परिष्कृत और प्रांजल हैं। ब्राउन्ट मुझे नदी, उपवन, खुली हवा, अंगूर और उद्यानों और सुरभि के गीतकारों में बेहद पसन्द हैं। ह्विटियर की शौर्य, पराक्रम और वीरता की काव्य-धारा में अवगाहन करके मुझे आनन्द की अनुभूति होती है।

भ्रामी हॉस्पीटल का एक वार्ड

मैं अपनी उस एक यात्रा का भी विशेष उल्लेख कर दूं जो मैंने मिलिटरी की बैरकनुमा एक मंजिली इमारत, ७वीं स्ट्रीट पर उस समय के हॉर्स रेलवे मार्ग के अन्त में स्थित कैंमबैल अस्पताल की, की है। अलग-अलग वार्डों में बटी हुई एक लम्बी इमारत है। मैं आपको छठे वार्ड में ले चलता हूं। इसमें इस समय ८० या १०० मरीज हैं, आधे बीमार और आधे घायल। इमारत कुछ नहीं है, केवल खड़ी दीवारें हैं जिनके अन्दर सफेदी पुती है। उसमें पतले फ्रेम के लोहे के सकडे और सारा पलंग बिछे हुए हैं। आप बीच के रास्ते में होकर चलते हैं तो दोनों ओर रोगियों की शैयायें हैं और जिनके पैर आपकी तरफ और सिर दीवारों की ओर है। बड़े-बड़े चूल्हों में आग जलती है। सारी इमारत और उसमें रहने वालों का दृश्य एक बार में ही देखा जा सकता है क्योंकि कोई भी विभाजित करने वाली दीवारें नहीं हैं। आपको २ या ३ चारपाइयों से कराहने वाले रोगियों की आहें और दूसरी असह्य वेदना की ध्वनियाँ भी सुनाई पड़ सकती हैं किन्तु बीच में पूर्ण शान्ति है जो पीड़ा प्रदर्शन की लगभग एक मर्मान्तक स्थिति है। इन रुग्ण व्यक्तियों में से अधिकांश देहात के नौजवान हैं जो या तो किसानों के बेटे हैं या ऐसे ही किसी और वर्ग के। उनकी सुन्दर और विशाल गठन को तो देखो, उनके लम्बे चौड़े सीने और उनमें से कितने ही आज भी सुदृढ़ शारीरिक गठन और स्वास्थ्य के सबूत हैं। उदासी के बीच लेटे हुए हमारे इन अमेरिकन घायलों के मौन व्यवहार की ओर तो देखो जो अधिकांशतया निश्चित रूप से पश्चिम के सभी राज्यों और नगरों न्यू इंग्लैण्ड, न्यूयार्क, न्यूजर्सी और पेनसिल्वेनिया के प्रतिनिधि हैं। उनमें से अधिकांश के कोई मित्र, परिचित या रिश्तेदार नहीं है जो उनसे अपनी बीमारी और घावों की वेदना के मध्य उन्हें सहानुभूति और दिलासा के दो शब्द कह सकें।

कौनेक्टीकट का एक रोगी यहाँ २५वें नम्बर की शैया पर एच डी बी नाम का व्यक्ति है जो २७वीं कौनेक्टीकट की कंपनी का नवजवान है। इसके परिजन न्यू हैवेन के निकट नीदरलैण्ड में रहते हैं। हालांकि इसकी उम्र २१ से ज्यादा नहीं है या फिर २० के आस पास होगी। यह दुनियां में समुद्र और धरती पर काफी घूम आया है और जल थल दोनों का युद्ध भी कुछ देख चुका है। जब मैं पहली बार मिला था तो यह बहुत बीमार था, इसे भूख नहीं लगती थी। पैसे की भेंट इसने स्वीकार नहीं की और बताया कि उसे किसी चीज जरूरत नहीं है। क्योंकि मैं उसके लिए कुछ न कुछ करने के लिए व्याकुल था इसलिए उसने यह मान लिया कि उसे घर की बनी हुई चावल की लप्सी बहुत पसन्द है जिसको वह किसी अन्य वस्तु की

तुलना में बड़े आनन्द के साथ खाता है। उसका पेट उस समय बड़ा कमजोर था जिस डाक्टर से मैंने सलाह ली उसने बताया कि इस समय उसे पोषण देना बड़ा लाभप्रद होगा किन्तु अस्पताल की वस्तुएं जो आमतौर पर मिलने वाली वस्तुएं हैं अच्छी होती है उसके मन में उलटा विद्रोह उत्पन्न करती हैं। मैंने जल्दी ही उसके लिए चावल की लप्सी उपलब्ध कर दी। वाशिंगटन की महिला मिसेज ओ सी ने जब उसकी इच्छा के बारे में सुना तो उसने स्वयं लप्सी तैयार की जिसे मैं उसके पास दूसरे दिन ले गया। बाद में स्वयं उसने बताया कि वह ३ या ४ दिनों तक उस पर निर्वाह करता रहा। यह भी पूर्वी अमेरिकन नवजवानों खास तौर से यांकी नवजवानों का एक अच्छा उदाहरण है। यह मुझे बड़ा पसन्द आया और मैंने उसे एक बढ़िया किस्म का पाइप भी प्रदान किया। बाद में उसके घर से बहुत सारी चीजों से भरा एक बक्स आ गया था। मुझे उसके साथ रोजाना सायंकालीन भोजन तो करना ही पड़ता था।

एक महिला नर्स का अन्तिम संस्कार

एक अस्पताल मे घटित घटना लोजिये। एक महिला नर्स कुमारी अथवा श्रीमती विलिम्स जो बड़े अर्से से सैनिकों की मित्र रही है और सेना मे नर्स का कार्य करती रही है और इस कार्य में इस प्रकार तल्लीन हो गई थी इसे वही जान सकता है जिसने उसका अनुभव किया हो। वह इस शीत ऋतु मे बीमार पड़ गई, कुछ दिनों तक तो उसके जीवन की गाड़ी चलती रही और अन्त मे वह अस्पताल मे मर गई। उसकी अन्तिम इच्छा थी कि उसे सैनिक पद्धति से सैनिको की कब्रों के बीच दफनाया जाय। उसकी इस इच्छा को पूर्ण रूप से पूरा किया गया। उसकी लाश सैनिकों की कब्रों के बीच दफनाई गई और कब्र पर उसे तोपों से सलामी दी गई। यह घटना आज से कुछ दिन पूर्व ऐनापोलिश में घटित हुई।

अब्राहम लिंकन

मैं हर दिन राष्ट्रपति को देखता हूं क्योंकि मैं ऐसी जगह रहता हूं जहां होकर शहर से वे अपने निवास स्थान पर जाते आते हैं। ग्रीष्म ऋतु में वे व्हाइट हाउस कभी नहीं सोते अपितु वे लगभग ३ मील उत्तर की ओर एक बड़े स्वास्थ्यप्रद स्थान-संयुक्त राज्य मिलटिरी सेवा के सोल्जर्स रूम में निवास करते हैं। मैंने उन्हें आज वर्मान्ट ऐवेन्यू एन स्ट्रीट के निकट लगभग ८॥ बजे कार्यालय जाते देखा था। उनके साथ २५ या ३० घुडसवार हमेशा साथ होते है और उनके दोनों कंधों की ओर बराबर चलते रहते हैं। उनका कहना है कि सुरक्षा का यह प्रबन्ध उनकी इच्छा के विपरीत है फिर भी अपने मन्त्रियों को वे अपनी इच्छानुसार कार्य करने देते हैं। जब इन घुड़सवारों के साथ राष्ट्रपति जाते हैं, तो पोशाक और घोड़ों की दृष्टि से कोई बहुत सुन्दर दर्शन नही होते हैं।

राष्ट्रपति लिंकन एक ठीक आकार के आराम से चलने वाले भूरे घोड़े पर सवार होते हैं। उनकी पोशाक सादा काले रंग की होती है। वे काला टोप लगाते हैं और अपने वस्त्रों से बहुत सामान्य औसत आदमी दिखाई देते है। पीली पट्टियां लगाये हुए लैफ्टीनेंट उनकी बाईं ओर होते हैं और उनके पीछे २ चलते पीली पट्टियां लगाये हुए जाकेट पहने घुड़सवार होते हैं। वे लोग सामान्यतया धीरे धीरे जाते हैं क्योंकि जिनकी सेवा मे वे लगे हुए हैं उन्होने लगभग यही धीमी गति निश्चित कर दी है। यह सादा लवाजमा ज्यों ही लेफेते चौराहे पर होकर आता है कोई विशेष कौतूहल उत्पन्न नहीं करते। हां कुछ जिज्ञासु अजनबी रास्ते मे ठहर कर अवश्य उनकी ओर देख लेते हैं।

मैं अब्राहम लिंकन के घने रक्तिम चेहरे की ओर जिस पर घनी रेखायें उभरी होती हैं स्पष्टतया देख लेता हूं। उनकी आंखें एक घनीभूत उदासी को अभिव्यंजित करती हुई सी प्रतीत होती हैं। हमारा परस्पर नमस्कार भी होता है। कभी कभी राष्ट्रपति खुली बग्घी में आते जाते हैं। घुड़सवार हमेशा उनके साथ होते हैं। जैसे ही वे सायंकाल या कभी कभी सुबह जाते हैं और जल्दी लौटते हैं मैं अक्सर उन्हें देख लेता हूं। लौटते समय वे के० स्ट्रीट पर सेक्रेटरी आफ वार के शानदार मकान पर ठहरते हैं और वे उनसे विचार विमर्श करते हैं। अगर वे अपनी बग्घी में होते हैं तो मैं उन्हें अपनी खिड़की से देख सकता हूं। वे उतरते नहीं हैं, अपनी सवारी पर ही बैठे रहते हैं और मिस्टर स्टैन्टन उनके स्वागत के लिए आते हैं। कभी कभी ... जो १०–११ साल का है, उनके दायीं ओर छोटे से टट्टू पर सवार

होकर जाता है। यदा कदा गर्मियों के दिनो मे दोपहर के बाद मैंने राष्ट्रपति को अपनी पत्नी के साथ शहर मे होकर अपनी आमोद यात्रा मे जाते देखा है। श्रीमती निक्सन पूर्ण रूप से काले वस्त्र पहिने थी और एक लम्बा अवगुंठन डाले थी। गाड़ी बहुत साधारण किस्म की होती है, केवल उसमे दो घोड़े होते हैं। एक बार वे लोग मेरे बहुत निकट से गुजरे और मैंने पूरी तरह से राष्ट्रपति के चेहरे को देखा। जैसे ही वे धीमे से मेरे पास से गुजरे उनकी दृष्टि मुझ पर सीधी पड़ी। वे मुस्कुराए और नमस्कार किया किन्तु उस मुस्कान के अन्तराल में मैंने एक ऐसी व्यजना देखी जिसकी मुझे चाह रही है। कोई भी कलाकार और चित्रकार इस व्यक्ति के मुखडे से टपकने वाले मधुर और स्निग्ध भाव को व्यंजित नहीं कर सकता। इस काम के लिए दो या तीन शताब्दि पहले का कोई महान चित्रकार चाहिये।

———

चांदनी रात में व्हाइट हाउस

कितना सुहावना मौसम है। मैं कभी-कभी रात में, चांदनी में काफी देर तक विचरण करता रहता हूं। आज की रात मैंने राष्ट्रपति के निवास पर एक दीर्घ दृष्टि डाली। वह प्रासाद तुल्य धवल धौत भवन, ऊंचे गोलाकार स्तम्भ, नितान्त निरभ्र, सुच्चिकरण प्राचीरें और स्निग्ध ज्योत्मना निष्प्रभ संगमरमर पर प्रवाहित होती हुई और विचित्र धुंधले बिम्ब (परछाइयां नहीं) उत्पन्न करती हुई सी। सर्वत्र एक स्निग्ध पारदर्शी नीलाभ चन्द्रिका, शुभ्र और प्रचुर गैस की रोशनियां विभिन्न कक्षों, प्राचीरों और मेहराबों पर वायु के साथ हिलोरें खाती हुई। हर एक वस्तु ऐसी शुभ्र-श्वेत, संगमरमर सी शुद्ध और आंखों में चकाचौंध करने वाली, फिर भी प्रति तरल और सस्मित। भावी कविताओं के स्वप्नों और नाटकों का व्हाइट हाउस उस स्निग्ध और अनुपम चन्द्रिका में बहती हुई चांदनी की धारा में तरुओं के मध्य! इसका जगमगाता हुआ अग्र भाग वास्तविकता और छलना से घिरा हुआ। वृक्षों की आकृतियां और उनकी शाखाओं के मोड़ और गोलाइयां! तारों और आसमान की छाया में धरती का व्हाइट हाउस! सौंदर्य का व्हाइट हाउस! रात को जिसके द्वारों पर शान्त भाव से चलते हुए, नीले ओवरकोट पहने हुए द्वारपाल जो तुम्हें रोकते नहीं बल्कि जिस ओर भी तुम जाते हो, तीक्ष्ण दृष्टि से तुम्हारी ओर देखते हैं।

———

परिशिष्ट

I

व्हिटमैन और रवीन्द्र

प्राच्य और पाश्चात्य दार्शनिकों ने बताया है कि सत्य एक और अविभाज्य है किन्तु मानवीय क्रिया-कलापों में यह इतना प्रकट रूप से प्रतीत नहीं हुआ। यह न केवल खंडित और वस्तुतः विभाजित हुआ-एक सत्य के सैंकड़ों, हजारों यहां तक कि लाखों रूप सामने आए, अपितु उसके रूप-रंग और यहां तक कि कभी-कभी मूल तत्व भी पूर्णतः परिवर्तित हो गये। निःसंदेह, यह प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई। जब भी द्वन्द्व होता है, चाहे उसका आकार कोई क्यों न हो, अधिकांशतः मेरे और आपके सत्य के बीच द्वन्द्व होता है।

युगों-युगों से ऐसे मनीषी हुए हैं जिन्होंने सत्य के विविध रूपों को अस्वीकार किया है और ईमानदारी से सहज और एक सत्य का अन्वेषण किया है। विश्व ने जिन्हें महान और विवेकी के रूप में मान्यता दी है; उन्हें इसलिए मान्यता नहीं मिली कि उन्होंने अंतिम रूप से एक बार ही न सुलझाए जा सकने वाले प्रश्न को सुलझा लिया बल्कि इसलिए कि उन्होंने वास्तविकता के मूल में छिपी एक वास्तविकता को प्रकट करने तथा उसे दिखाने का प्रयत्न किया।

मई के माह में ऐसे दो मनीषियों का जन्म हुआ—वाल्ट व्हिटमैन और रवीन्द्रनाथ टाकुर जो ऊपर से इतने भिन्न हैं कि उनमें न वातावरण की विरासत ही भिन्न है बल्कि विरोधी सामाजिक तथा भौतिक स्थितियों से भी प्रभावित हैं। और वे विभिन्न पीढ़ियों में पैदा हुए हैं। फिर भी दोनों की रचनाओं में एक सी आध्यात्मिक-धारा के दर्शन होते हैं। इन दोनों कवियों के साम्य को अमरीकी कवि रैंडल जैरेल ने 'देश काल की प्रतीप्यता' की संज्ञा दी है।

मई में दोनों का जन्म एक संयोग की बात है जिसका कोई विशेष महत्व नहीं। इससे केवल हम दोनों को एक साथ श्रद्धांजलि अर्पित करने में समर्थ होते हैं, लेकिन दोनों के बीच और भी गहरा सम्बन्ध है।

व्हिटमैन और रवीन्द्र के साहित्य में जो आत्मिक सहानुभूति के दर्शन होते हैं; यह दोनों के उन दृष्टि-बिन्दुओं को एकात्मता प्रदान करती है। व्हिटमैन और रवीन्द्र दोनों ने वाद-विवाद से आच्छन्न विश्व के प्रति तादात्म्य पर जोर दिया, कविता में उसका प्रकट की तथा मानव-कल्याण के लिए प्रयत्न किया।

हो सकता है कि दोनों कवियों का प्रेरणा-स्रोत एक हो। जीवन के प्रति यह एकात्म-दृष्टि जो दोनों में मिलती है, वेदान्त-दर्शन ने अभिव्यक्त की है जिसकी रवीन्द्र

सर्वमान्य उपज कहे जाते हैं। हाल ही में प्रमाण उपलब्ध हुए हैं कि व्हिटमैन ने भी वेदांत से प्रेरणा ली थी।

यद्यपि यह समव नहीं कि कवि पर दर्शन का इतना अधिक प्रभाव रहा हो कि उसकी मूल चिंतन-धाराओं को ही पूर्णतः परिवर्तित कर दे लेकिन फिर भी दोनों महान् कवियों के बीच समानता दृष्टव्य है और यह अनुमान किया जा सकता है कि संभवतः वेदांत ही दोनों का प्रेरक रहा है।

वाल्ट व्हिटमैन ने अपने आप को सीधासादा, पौरुषयुक्त, सहृदय, चिंतक, ऐन्द्रिक और ढीठ कहा है। उन्होंने अपने आपको विविध रूपों में देखा है। "क्या मैं स्वयं का खण्डन करता हूं? अच्छा, तो मैं स्वयं का खण्डन करता हूं।" और, चिंतन उन्हें आमन्त्रित करता है—"ऐसा गीत गाओ जैसा अभी तक किसी कवि ने नहीं गाया, सार्वलौकिकता का गीत गाओ।"

वस्तुतः व्हिटमैन एक-साथ अमरीकी और सार्वलौकिक थे, अमरीका के प्रति उनका प्रेम, यदि यों कहा जाय, उनका 'अमरीकीपन' शेष मानवता से आध्यात्मिक तादात्म्य में बाधक नहीं, सहायक सिद्ध हुआ।

रवीन्द्रनाथ ने एक बार अमरीका में कहा था—"व्हिटमैन आपके महान् कवि हैं। उनकी रचनाओं से मैं आपके देश को जानता हूं और उसकी हृदय की धड़कन को समझता हूं। वह आपके राष्ट्र की महान् वाणी है, शायद इतनी महान् अन्य कोई नहीं।" साथ ही व्हिटमैन की समस्त रचनाओं की मुख्य कुंजी वह एकता है जो विभिन्नताओं को एक सूत्र में पिरोती है:—

> मैं अपने आपका गीत गाता हूं, एक सहज पृथक व्यक्ति का,
> फिर भी लोकतान्त्रिक, समष्टि का शब्द उच्चारता हूं।

यह दृष्टिकोण तब संभव है जैसा कि वेदान्त में बताया गया है, जब ऐसी चेतनता व्यक्ति प्राप्त करे कि सब न केवल एक प्रतीत होने लगें अपितु सबसे तादात्म्य स्थापित हो जाय। सनातन अनित्य है, शायद व्हिटमैन ने लिखा:—"यह सब मैं अनुभूत करता हूं अथवा हूं,"

उन्होंने आगे कहा:

> आकाशज, सब में व्याप्त है.........
> सब रूपों का सार, वास्तविक तादात्म्यता का जीवन, स्थायी, यथार्थ.....
> मैं, व्यापक आत्मा हूं.........

यहां वह विशिष्ट तथा ससीम से भी ऊंचा अनुदर्शन प्राप्त कर लेते हैं—उनकी सहानुभूति की परिधि विस्तृत हो जाती है जिसमें सभी मानव समाविष्ट हैं। व्हिटमैन

यद्यपि "एकाकी पृथक व्यक्ति" हैं फिर भी "लोकतांत्रिक" तथा "समष्टि" सर्व पृथक नहीं किए जा सकते हैं:—

मैं अपना उत्सव मनाता हूं, अपना गीत गाता हूं।

जो मैं सच मानता हूं, उसे तुम सच मानोगे।

सन् १८५५ में 'दी लीव्ज ऑफ ग्रास' के प्रथम प्रकाशन पर थोरो ने यह टिप्पणी की थी कि पुस्तक 'आश्चर्यजनक रूप से प्राच्य' है, एमर्सन ने उसे भगवद्‌गीता से प्रभावित बताया था।

'पैसेज टू इण्डिया' शीर्षक से उनकी कविता तथा वेदांती विचारधारा से साम्य के बावजूद भारत के बारे में उनकी जानकारी वास्तविकता से कोसों दूर है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने अपनी काव्य-रचना के पूर्व प्राच्य साहित्य का वस्तुतः अध्ययन किया था। हाल ही के शोधकार्य से यह संकेत मिलता है कि उनका रहस्यवाद, प्राच्य की हृदतिरेक करने वाली पुस्तकों से प्रभावित है। फारसी और हिन्दू-कवि तथा भगवद्‌गीता जिनका वे वर्जीनिया के फालमाऊथ गृह-युद्ध अस्पताल शिविर में रुग्ण-सैनिकों के सामने पाठ किया करते थे। "लीव्ज ऑफ ग्रास" के प्रकाशन के छः वर्ष बाद गृह-युद्ध हुआ, लेकिन इसके विभिन्न संस्करणों के लम्बे-चौड़े प्रस्तावना-खण्ड यह प्रकट करते हैं कि वे बड़े अध्ययनशील थे और श्रम-साध्य आत्म-शिक्षक थे। हो सकता है कि प्राच्य-साहित्य का उन्होंने काफी पहिले अध्ययन कर लिया हो।

सन् १८३९ और १८५० के बीच में वे विविध पत्र-पत्रिकाओं से अनेक रूपों में संबद्ध रहे। इनके संपादन में उन्हें अपने युग का साहित्य, समालोचना के लिए पढ़ना पड़ा। निस्संदेह कुछ ने उनके ज्ञान को विस्तृत किया और उन्हें नए दृष्टि-बिन्दु प्रदान किए। १६वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, अमरीका में अद्वैतवादी वेदान्ती-साहित्य व विशेषतः राममोहन राय की रचनाएं पढ़ी जाती थी। इन रचनाओं का विशेषतः एमर्सन का व्हिटमैन पर प्रारम्भिक जीवन-काल में, निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा होगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि वेदांत के उसी सार्वलौकिक दृष्टिकोण के दर्शन व्हिटमैन की मान्यताओं और रचनाओं में होने है। वही अन्तर्दर्शन (एहलाम), वही इन्द्रियों तथा बुद्धि से परे स्व-अस्तित्व से ज्ञानार्जन का मार्ग, अथवा आत्म-बोध—व्हिटमैन का आत्म-दर्शन और मूलबिन्दु—और व्यष्टि तथा समष्टि की वही मिलन-स्थली उनकी कविता में प्रकट हुई है। वेदान्त को भांति ही, व्हिटमैन का आत्म-दर्शन, रहस्यमयी आत्मा, समष्टि को व्याप्त करती है और धरातल के नीचे 'गुणों और वस्तुओं की गहराइयों' में पैठती है और 'मूल सिद्धान्तों' का स्पर्श करती है।

उनके विचार और उपनिषद् की 'आत्मन्-ब्रह्मन्' की परिकल्पना में इतना साम्य उल्लेखनीय है।

उसी यथार्थ के सर्वत्र दर्शन करने, जगत में उसके क्रिया-कलापों और परिणामों के बीच रहने, सभी अनुभवों को प्राप्त करने तथा फिर भी उनसे पृथक् रहने की यह स्थितप्रज्ञ की सी स्थिति है। व्हिटमैन कहते हैं:—

> ……निराशाएं और हर्षातिरेक,
> युद्ध, भ्रातृवध-युद्ध की विभीषिकाएं, संदिग्ध समाचारों का ज्वर,
> उत्तेजनापूर्ण घटनाएं;
> ये मुझे निशिवासर मिलती हैं, और चली जाती हैं, किन्तु वे 'मैं',
> मेरी नहीं।

जगत से अलगाव का यह उनका विरोधाभास और साथ ही उससे तादात्म्य आत्मज्ञान से उद्भूत उनके विचार से मेल खाता है। लोकतंत्र आवश्यकीय रूप से आध्यात्मिक सिद्धांत है, समता केवल अ-अभिन्न व्यक्तित्वों के विश्व में ही संभव है।

वास्तविक व्यक्तिवाद और सार्वभौमिकता एक ही है। इस दृष्टि से भी व्हिटमैन वेदान्ती जैसे ही हैं। और जब वह अपनी 'लीव्ज़ ऑफ ग्रास' को, जो अमरीकी स्वतन्त्रता-दिवस पर ४ जुलाई को प्रकाशित हुई थी—''लोकतांत्रिक वनस्पति' बताते हैं, तब वह उसे अमरीकी आत्मा से एकरूप करते हैं। उन्होंने अपने संकलन को समुचित संज्ञा दी है। लेकिन यह 'अमरीकी वनस्पति' से कुछ अधिक है, क्योंकि अपनी कविता ''सेलुट ए' मोंड़े'' में वह न केवल अमरीकी बल्कि समस्त मानवों को असीम मानव समुदाय में शामिल करते हैं। उन्होंने कहा है कि राजनीतिक लोकतंत्र विश्व के सभी लोगों के लिए महान् है क्योंकि सनातन नियमों के अनुसरण में वह विश्व पर शासन करेगा।

वेदांत का मुख्य संदेश है—पृथकत्व की भावना व विभिन्न होना अज्ञान जन्य है। वास्तविक ज्ञान सबको एकरूप मानने और समष्टि में व्यष्टि और व्यष्टि के दर्शन करने में है। जिसे यह सर्वोपरि चेतनता प्राप्त हो जाती है, वह समस्त दुखों और पीडाओं से मुक्त हो जाता है, और चूंकि वह प्रत्येक दूसरे मानव में आत्मन् का दर्शन करता है—अतः किसी के प्रति घृणा नहीं कर सकता। यह चेतनता केवल प्रेम से संभव है, एक मात्र प्रेम ही विश्व में एकता कायम करने की शक्ति है। प्रेम असीम है। समूची सृष्टि के मूल में प्रेम ही यथार्थ तत्व है और यही जीवन की निरंतरता के मूल में है। इसके अभाव का अर्थ है—नाश (मृत्यु)।

यही दार्शनिक पृष्ठभूमि है जिसमें व्हिटमैन और रवीन्द्र का विवेचन किया जाना चाहिए।

रवीन्द्र ने एक बार लिखा था—"मैं एक ऐसे परिवार में पैदा हुआ था जो उस समय उपनिषद् के दर्शन पर आधारित एक ही ईश्वर मे विश्वास करने वाले धर्म को विकसित करने में पूरी सच्चाई के साथ संलग्न था।" उस दर्शन की एकता उनकी क्रियाशील विविध जीवन की विशिष्टता है, जो उनकी रचनाओं में प्रसारित हुई है। एक उदाहरण देखिए—

> यह मेरा एक जन्म अनेक परिवर्तनशील रूपो के अनेक जन्मो में बुना हुआ है
> जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश विविध किरणों से बना है—एकता में
> प्रत्येक प्रतीति अगणित अदृश्य अन्य रूपों से वेष्ठित है।

शांतिनिकेतन का उद्देश्य, जो व्यावहारिक जगत् में उनके सृजन का एक उदाहरण है, वेदान्तिक है। 'यात्रा विश्वम् भावात्येकानिदम्"—जहाँ विश्व एक ही घोंसले में अपना निवास बनाता है।

यदि रवीन्द्र कमजोर की कायरता, शक्तिशाली की जिद, संपन्नता का लोभ, जाति के घमण्ड की कड़ुवाहट और मानव के अपमान को नहीं जानते तो, वे यह कैसे लिख सके—

> विज्ञान से प्रदीप्त उर्ध्व व्योम में, शक्ति अपने आपको विस्मृत कर देती है,
> जब भूख और अत्यधिक लोलुपता, एक दूसरे से टकराती है
> तब तक कि पृथ्वी कांपना शुरू नहीं कर देती
> और विजय के स्तम्भों मे भय से दरारें नहीं पड़ जातीं,
> और हृतभ्रम खाइयों के कगार तक बहाकर उन्हें नहीं ले जाती ?

व्हिटमैन की भांति रवीन्द्र में प्रत्यक्ष और सनातन के विरोधाभास के बीच समन्वय को स्वीकारने की क्षमता और उसकी आवश्यकता पाई जाती है। दोनों में उसी समन्वय पर जोर है।

रवीन्द्रनाथ ने लिखा—"यह उल्लेखनीय है कि सभी महान् धर्मों का ऐतिहासिक मूल उन व्यक्तियों में है जिन्होंने अपने जीवन में एक सत्य के दर्शन किए जो मानवीय तथा शुभ था। उन्होंने धर्म को आसुरी-शक्ति के जादुई रूप से बचाया। वे उसे मानव के अन्तस्थल के निकट लाए और उसे किसी व्यक्ति-विशेष के भले के लिये नहीं अपितु समूची मानवता के कल्याण में उसकी सिद्धि देखी।" सभी महान् धर्म स्वीकारते है "…… सर्वोपरिसत्ता का प्रेम और बुद्धि, जो हम सबसे ऊपर हैं, जिसके प्रति प्रेम, जीवमात्र से प्रेम है, और समस्त प्रकार के प्रेम की तुलना में शक्ति और गहराई में सर्वोत्कृष्ट है, जो कठिन कार्यों और बलिदान-त्याग के लिए अनुप्रेरित करता

है, उसका प्रतिफल अन्य कुछ नहीं इस प्रेम की ही सिद्धि में है।"

वेदान्त की निम्नलिखित पंक्तियों में ह्विटमैन अथवा रवीन्द्र के कथन अथवा अनुभूति से आश्चर्यजनक साम्य है— 'जो सब वर्णों से ऊपर है, और जो अपनी बहुविध शक्ति से सभी वर्णों के लोगों की निहित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, जो सृष्टि के आदि और इति में है, वह हमें सदिच्छा से एकरूप करे।"

इसी भावना से प्रेरित होकर ह्विटमैन ने अपनी 'पेसेज टू इण्डिया' में लिखा–

> हे ! आत्मा, क्या तुमने प्रारंभ से ही ईश्वर के मंतव्य को नहीं समझा?
> पृथ्वी एक सूत्र में पिरोई जाने को है, जातियां, पड़ोसी, एक दूसरे से विवाह रचायें,
> जलधि पार किए जाने को है, दूरी निकटता में बदली जाने को है,
> भूखण्ड एक दूसरे से आलिंगित होने को हैं।

वस्तुतः ह्विटमैन अमरीका की और रवीन्द्र भारत की आत्मा है किन्तु दोनों, राष्ट्रीय सीमाओं को लांघते हैं। रवीन्द्र ने कहा—"मैं भारत को प्यार करता हूं; इसलिए नहीं कि मैं भौगोलिक परिधि का भक्त हूं बल्कि इसलिए कि उसने आंधी भरे युगों में मनीषियों के जीवंत मंत्र सुरक्षित रखे।

रवीन्द्र में असंख्य मूल सिद्धान्तों और आज की यथार्थताओं की रोशनी में वेदान्त की एक नये सिरे से व्याख्या है। वह एक ऐसे दर्शन की व्याख्या है जिसे कार्यरूप में परिणित किया गया और जिसे गुरुदेव ने अपने जीवन में उतारा। अन्ततः विरोधी तत्वों के अनुभव का वही सामंजस्य हमें ह्विटमैन के जीवन और साहित्य में मिलता है।

परिशिष्ट

II

THOU READER

Thou reader throbbest life and pride and love the same as I,
Therefore for thee the following chants.

SHUT NOT YOUR DOORS

Shut not your doors to me proud libraries,
For that which was lacking on all your well-fill'd shelves, yet
needed most, I bring,
Forth from the war emerging, a book I have made,
The words of my book nothing, the drift of it every thing,
A book separate, not link'd with the rest nor felt by the intellect,
But you ye untold latencies will thrill to every page.

POETS TO COME

Poets to come ! orators, singers, musicians to come !
Not to-day is to justify me and answer what I am for,
But you, a new brood, native, athletic, continental greater than
before known,
Arouse ! for you must justify me.
I myself but write one or two indicative words for the future,
I but advance a moment only to wheel and hurry back in the
darkness.
I am a man who, sauntering along without fully stopping, turns a
casual look upon you and then averts his face,
Leaving it to you to prove and define it,
Expecting the main things from you.

WHEN I HEARD AT THE CLOSE OF THE DAY

When I heard at the close of the day how my name had been
receiv'd with plaudits in the capitol, still it was not a happy
night for me that follow'd,
And else when I carous'd, or when my plans were accomplish'd,
still I was not happy,
But the day when I rose at dawn from the bed of perfect health,
refresh'd, singing, inhaling the ripe breath of autumn,
When I saw the full moon in the west grow pale and disappear in
the morning light,
When I wander'd alone over the beach, and undressing bathed,
laughing with the cool waters, and saw the sunrise,

Done with indoor complaints, libraries, querulous criticisms,
Strong and content I travel the open road.
The earth, that is sufficient,
I do not want the constellations any nearer,
I know they are very well where they are,
I know they suffice for those who belong to them.
(Still here I carry my old delicious burdens,
I carry them, men and women, I carry them with me wherever I go,
I swear it is impossible for me to get rid of them,
I am fill'd with them, and I will fill them in return.)

2

You road I enter upon and look around, I believe you are not all that is here,
I believe that much unseen is also here.
Here the profound lesson of reception, nor preference nor denial,
The black with his woolly head, the felon, the diseas'd, the illiterate person, are not denied;
The birth, the hasting after the physician, the beggar's tramp, the drunkard's stagger, the laughing party of mechanics,
The escaped youth, the rich person's carriage, the fop, the eloping couple,
The early market-man, the hearse, the moving of furniture into the town, the return back from the town,
They pass, I also pass, any thing passes, none can be interdicted,
None but are accepted, none but shall be dear to me.

3

You air that serves me with breath to speak !
You objects that call from diffusion my meanings and give them shape !
You light that wraps me and all things in delicate equable showers!
You paths worn in the irregular hollows by the roadsides!
I believe you are latent with unseen existences, you are so dear to me.
You flagg'd walks of the cities! you strong curbs at the edges!
You ferries! you planks and posts of wharves! you timber-lined sides! you distant ships!
You rows of houses! you window-pierc'd facades! you roofs!

And when I thought how my dear friend my lover was on his way coming, O then I was happy.
O then each breath tasted sweeter, and all that day my food nourish'd me more, and the beautiful day pass'd well,
And the next came with equal joy, and with the next at evening came my friend,
And that night while all was still I heard the waters roll slowly continually up the shores,
I heard the hissing rustle of the liquid and sands as directed to me whispering to congratulate me,
For the one I love most lay sleeping by me under the same cover in the cool night,
In the stillness in the autumn moonbeams his face was inclined toward me.
And his arm lay lightly around my breast—and that night I was happy.

ARE YOU THE NEW PERSON DRAWN TOWARD ME ?

Are you the new person drawn toward me ?
To begin with take warning, I am surely far different from what you suppose;
Do you suppose you will find in me your ideal?
Do you think it so easy to have me become your lover?
Do you think the friendship of me would be unalloy'd satisfaction?
Do you think I am trusty and faithful ?
Do you see no further than this facade, this smooth and tolerant manner of me?
Do you suppose yourself advancing on real ground toward a real heroic man?
Have you no thought O dreamer that it may be all maya, illusion?

SONG OF THE OPEN ROAD

1

Afoot and light-hearted I take to the open road,
Healthy, free, the world before me,
The long brown path before me leading wherever I choose.
Henceforth I ask not good-fortune, I myself am good-fortune,
Henceforth I whimper no more, postpone no more, need nothing,

Done with indoor complaints, libraries, querulous criticisms,
Strong and content I travel the open road.
The earth, that is sufficient,
I do not want the constellations any nearer,
I know they are very well where they are,
I know they suffice for those who belong to them.
(Still here I carry my old delicious burdens,
I carry them, men and women, I carry them with me wherever I go,
I swear it is impossible for me to get rid of them,
I am fill'd with them, and I will fill them in return.)

2

You road I enter upon and look around, I believe you are not all that is here,
I believe that much unseen is also here.
Here the profound lesson of reception, nor preference nor denial,
The black with his woolly head, the felon, the diseas'd, the illiterate person, are not denied;
The birth, the hasting after the physician, the beggar's tramp, the drunkard's stagger, the laughing party of mechanics,
The escaped youth, the rich person's carriage, the fop, the eloping couple,
The early market-man, the hearse, the moving of furniture into the town, the return back from the town,
They pass, I also pass, any thing passes, none can be interdicted,
None but are accepted, none but shall be dear to me.

3

You air that serves me with breath to speak !
You objects that call from diffusion my meanings and give them shape !
You light that wraps me and all things in delicate equable showers!
You paths worn in the irregular hollows by the roadsides!
I believe you are latent with unseen existences, you are so dear to me.
You flagg'd walks of the cities! you strong curbs at the edges!
You ferries! you planks and posts of wharves! you timber-lined sides! you distant ships!
You rows of houses! you window-pierc'd facades! you roofs!

You porches and entrances! you copings and iron guards!
You windows whose transparent shells might expose so much!
You doors and ascending steps! you arches!
You gray stones of interminable pavements! you trodden crossings!
From all that has touch'd you I believe you have imparted to yourselves, and now would impart the same secretly to me,
From the living and the dead you have peopled your impassive surfaces, and the spirits thereof would be evident and amicable with me.

4

The earth expanding right hand and left hand,
The picture alive, every part in its best light,
The music falling in where it is wanted, and stopping where it is not wanted,
The cheerful voice of the public road, the gay fresh sentiment of the road.
O highway I travel, do you say to me *Do not leave me?*
Do you say *Venture not—if you leave me you are lost?*
Do you say *I am already prepared, I am well-beaten and undenied, adhere to me?*
O public road, I say back I am not afraid to leave you, yet I love you,
You express me better than I can express myself,
You shall be more to me than my poem.
I think heroic deeds were all conceiv'd in the open air, and all free poems also,
I think I could stop here myself and do miracles,
I think whatever I shall meet on the road I shall like, and whoever beholds me shall like me,
I think whoever I see must be happy.

5

From this hour I ordain myself loos'd of limits and imaginary lines,
Going where I list, my own master total and absolute,
Listening to others, considering well what they say,
Pausing, searching, receiving, contemplating,
Gently, but with undeniable will, divesting myself of the holds

that would hold me.
I inhale great draughts of space,
The east and the west are mine, and the north and the south are mine.
I am larger, better than I thought,
I did not know I held so much goodness.
All seems beautiful to me,
I can repeat over to men and women. You have done such good to me I would do the same to you,
I will recruit for myself and you as I go,
I will scatter myself among men and women as I go,
I will toss a new gladness and roughness among them,
Whoever denies me it shall not trouble me,
Whoever accepts me he or she shall be blessed and shall bless me.

6

Now if a thousand perfect men were to appear it would not amaze me,
Now if a thousand beautiful forms of women appear'd it would not astonish me.
Now I see the secret of the making of the best persons,
It is to grow in the open air and to eat and sleep with the earth.
Here a great personal deed has room,
(Such a deed seizes upon the hearts of the whole race of men,
Its effusion of strength and will overwhelms law and mocks all authority and all argument against it.)
Here is the test of wisdom,
Wisdom is not finally tested in schools,
Wisdom cannot be pass'd from one having it to another not having it,
Wisdom is of the soul, is not susceptible of proof, is its own proof,
Applies to all stages and objects and qualities and is content,
Is the certainty of the reality and immortality of things, and the excellence of things;
Something there is in the float of the sight of things that provokes it out of the soul.
Now I re-examine philosophies and religions,
They may prove well in lecture-rooms, yet not prove at all under

He traveling with me needs the best blood, thews, endurance,
None may come to the trial till he or she bring courage and health.
Come not here if you have already spent the best of yourself,
Only those may come who come in sweet and determin'd bodies,
No diseas'd person, no rum-drinker or venereal taint is permitted
here.
(I and mine do not convince by arguments, similes, rhymes,
We convince by our presence.)

11

Listen! I will be honest with you,
I do not offer the old smooth prizes, but offer rough new prizes,
These are the days that must happen to you:
You shall not heap up what is call'd riches,
You shall scatter with lavish hand all that you earn or achieve,
You but arrive at the city to which you were destin'd, you hardly
settle yourself to satisfaction before you are call'd by an
irresistible call to depart,
You shall be treated to the ironical smiles and mockings of those
who remain behind you,
What beckonings of love you receive you shall only answer with
passionate kisses of parting,
You shall not allow the hold of those who spread their reach'd
hands toward you.

12

Allons! after the great Companions, and to belong to them!
They too are on the road—they are the swift and majestic me
they are the greatest women,
Enjoyers of calms of seas and storms of seas,
Sailors of many a ship, walkers of many a mile of land,
Habitues of many distant countries, habitues of far-distant dwellin
Trusters of men and women, observers of cities, solitary toilc
Pausers and contemplators of tufts, blossoms, shells of the sho
Dancers at wedding-dances, kissers of brides, tender helpers
children, bearers of children,
Soldiers of revolts, standers by gaping graves, lowerers-down
coffins,

Journeyers over consecutive seasons, over the years, the curious years each emerging from that which preceded it,
Journeyers as with companions, namely their own diverse phases,
Fourth-steppers from the latent unrealized baby-days,
Journeyers gayly with their own youth, journeyers with their bearded and well-grain'd manhood,
Journeyers with their womanhood, ample, unsurpass'd, content,
Journeyers with their own sublime old age of manhood or womanhood,
Old age, *calm, expanded, broad with the haughty breadth of the* universe,
Old age, flowing free with the delicious near-by freedom of death.

13

Allons! to that which is endless as it was beginningless,
To undergo much, tramps of days, rests of nights,
To merge all in the travel they tend to, and the days and nights they tend to,
Again to merge them in the start of superior journeys,
To see *nothing* anywhere but what you may *reach it and pass it*,
To conceive no time, however distant, but what you may reach it and pass it,
To look up or down no road but it stretches and waits for you, however long but it stretches and waits for you,
To see no being, not God's or any, but you also go thither,
To see no possession but you may possess it, enjoying all without labor or purchase, abstracting the feast yet not abstracting one particle of it,
To take the best of the farmer's farm and the rich man's elegant villa, and the chaste blessings of the well-married couple, and the fruits of orchards and flowers of gardens,
To take to your use out of the compact cities as you pass through,
To carry buildings and streets with you afterward wherever you go,
To gather the minds of men out of their brains as you encounter them, to gather the love out of their hearts,
To take your lovers on the road with you, for all that you leave them behind you,
To know the universe itself as a road, as many roads, as roads for traveling souls

Speaking of any thing else but never of itself.

14

Allons! through struggles and wars!
The goal that was named cannot be countermanded.
Have the past struggles succeeded?
What has succeeded? yourself? your nation? Nature?
Now understand me well—it is provided in the essence of things that from any fruition of success, no matter what, shall come forth something to make a greater struggle necessary.
My call is the call of battle, I nourish active rebellion,
He going with me must go well arm'd,
He going with me goes often with spare diet, poverty, angry enemies, desertions.

15

Allons! the road is before us!
It is safe—I have tried it—my own feet have tried it well—be not detain'd!
Let the paper remain on the desk unwritten, and the book on the shelf unopen'd!
Let the tools remain in the workshop! let the money remain unearn'd!
Let the school stand! mind not the cry of the teacher!
Let the preacher preach in his pulpit! let the lawyer plead in the court, and the judge expound the law.
Camerado, I give you my hand!
I give you my love more precious than money,
I give you myself before preaching or law;
Will you give me yourself? will you come travel with me?
Shall we stick by each other as long as we live?

GIVE ME THE SPLENDID SILENT SUN

Give me the splendid silent sun with all his beams full-dazzling,
Give me juicy automnal fruit ripe and red from the orchard,
Give me a field where the unmow'd grass grows,
Give me an arbor, give me the trellis'd grape,
Give me fresh corn and wheat, give me serene-moving animals *teaching content,*

Give me nights perfectly quiet as on high plateaus west
    Mississippi, and I looking up at the stars,
Give me odorous at sunrise a garden of beautiful flowers w
    can walk undisturb'd,
Give me for marriage a sweet-breath'd woman of whom I s
    never tire,
Give me a perfect child, give me away aside from the noise o
    world a rural domestic life,
Give me to warble spontaneous songs recluse by myself, fo
    own ears only,
Give me solitude, give me Nature, give me again O Nature y
    primal sanities!

MIRACLES

Why, who makes much of a miracle?
As to me I know of nothing else but miracles,
Whether I walk the streets of Manhattan,
Or dart my sight over the roofs of houses toward the sky,
Or wade with naked feet along the beach just in the edge of th
    water,
Or stand under trees in the woods,
Or talk by day with any one I love, or sleep in the bed at night wi
    any one I love,
Or sit at table at dinner with the rest,
Or look at strangers opposite me riding in the car,
Or watch honey-bees busy around the hive of a summer forenoon,
Or animals feeding in the fields,
Or birds, or the wonderfulness of insects in the air,
Or the wonderfulness of the sundown, or of stars shining so quiet
    and bright,
Or the exquisite delicate thin curve of the new moon in spring:
These with the rest, one and all, are to me miracles,
The whole referring, yet each distinct and in its place.
To me every hour of the light and dark is a miracle,
Every cubic inch of space is a miracle,
Every square yard of the surface of the earth is spread with the
    same,
Every foot of the interior swarms with the same.

To me the sea is a continual miracle,
The fishes that swim—the rocks—the motion of the waves—the ships with men in them,
What stranger miracles are there?

UNNAMED LANDS

Nations ten thousand years before these States, and many times ten thousand years before these States,
Garner'd clusters of ages that men and women like us grew up and travel'd their course and pass'd on,
What vast-built cities, what orderly republics, what pastoral tribes and nomads,
What histories, rulers, heroes, perhaps trancending all others,
What laws, customs, wealth, arts, traditions,
What sort of marriage, what costumes, what physiology and phrenology,
What of liberty and slavery among them, what they thought of death and the soul,
Who were witty and wise, who beautiful and poetic, who brutish and undevelop'd,
Not a mark, not a record remains—and yet all remains.
O I know that these men and women were not for nothing, any more than we are for nothing,
I know that they belong to the scheme of the world every bit as much as we now belong to it,
Afar they stand, yet near to me they stand,
Some with oval countenances learn'd and calm.
Some naked and savage, some like huge collections of insects.
Some in tents, herdsmen, patriarchs, tribes, horsemen,
Some prowling through woods, some living peaceably on farms, laboring, reaping, filling barns,
Some traversing paved avenues, amid temples, palaces, factories,
libraries, shows, courts, theatres, wonderful monuments.
Are those billions of men really gone?
Are those women of the old experience of the earth gone?
Do their lives, cities, arts, rest only with us?
Did they achieve nothing for good for themselves?

I believe of all those men and women that fill'd the unnamed lands,
every one exists this hour here or elsewhere, invisible to us,
In exact proportion to what he or she grew from in life, and out
of what he or she did, felt, became, loved, sinn'd, in life.
I believe that was not the end of those nations or any person of
them, any more than this shall be the end of my nation, or
of me;
Of their languages, governments, marriage, literature, products,
games, wars, manners, crimes, prisons, slaves, heroes, poets,
I suspect their results curiously await in the yet unseen world,
counterparts of what accrued to them in the seen world,
I suspect I shall meet them there,
I suspect I shall there find each old particular of those unnamed
lands.